

संवाद

अंक 2023/2

जुलाई-दिसंबर, 2023

“जल सुरक्षा एवं जलवायु वित्त-पोषण”



संवाद

अंक 2023/2, दिसंबर, 2023

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

संरक्षक

डॉ. देबोलीना कुण्डू

संपादक

पूनम मल्होत्रा

समीक्षक

टी.पी. तिवारी

हिंदी अनुवादक

पूनम मल्होत्रा

सहायक अनुवादक

तनु

डिजाइनर

मौ. शाकिब

टंकक

मौ. शाकिब



राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

पता: प्रथम एवं द्वितीय तल, कोर 4बी,

भारत पर्यारवास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

टेलीफोन - 24643284, 24617543, 24643576, 24658639

ई-मेल - niua@niua.org वेबसाइट - www.niua.in

विषय सूची

विश्व हिंदी दिवस, 2024 पर श्री नरेंद्र मोदी जी का संदेश	4
निदेशक, रा.न.का.सं. की कलम से	5
जल सुरक्षा सुनिश्चित करना लचीली शहरी अर्थव्यवस्थाओं की आधारशिला	7
रेसिलिएंट शहरों के विकास के लिए जलवायु वित्त की शुरूआत.....	9
राजभाषा गतिविधियाँ.....	12
वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ.....	14
प्रशासनिक शब्दावली.....	15
लेख	16
कहानी संग्रह.....	26
कविता संग्रह.....	40
पत्रिका में योगदान हेतु.....	46
संस्थान में जुलाई-दिसंबर, 2023 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाएँ	47





सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

विदेश मंत्रालय और विदेश स्थित भारतीय मिशनों एवं केन्द्रों द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इन कार्यक्रमों में भाग ले रहे सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं।

अपनी सांस्कृतिक विविधता व विभिन्न भाषाओं की विरासत पर हर भारतवंशी को गर्व है। हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान और परंपरा को देश-दुनिया में पहुंचाने में हिन्दी की भूमिका अहम् है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान और भारतवंशियों को एकता के सूत्र में पिरोने में हिन्दी भाषा का योगदान उल्लेखनीय है।

यह देखना सुखद है कि अपनी सरलता, सहजता व साहित्यिक विरासत के साथ-साथ हिन्दी आज सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक की भाषा के रूप में भी युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। भारत की प्रगति के साथ ही हमारी पहचान और परंपराओं में दुनिया की रुचि बढ़ रही है। विदेशों में भी हिन्दी भाषा सीखने वाले लोगों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

पिछले वर्ष हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन में जिस उत्साह के साथ हिन्दी प्रेमियों ने इस मधुर भाषा की प्रगति के लिए कार्य करने का संकल्प दिखाया वह एक उज्वल भविष्य का मार्ग दिखाता है। हमारी समृद्ध विरासत पर गर्व के भाव को और सशक्त करने व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोगों में एकता व एकजुटता को बढ़ाने में हिन्दी की अहम् भूमिका होगी।

मुझे विश्वास है कि यह विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम सभी भारतवंशियों को, विशेषकर युवाओं को हिन्दी से जुड़ने और इसे अपने विभिन्न कार्यों में अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

विश्व हिन्दी दिवस पर मैं इसे समृद्ध और सशक्त बनाने में सतत योगदान दे रहे लोगों का, विशेषकर विदेश मंत्रालय, भारतीय मिशनों और केन्द्रों के सभी साथियों का अभिनंदन करता हूं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 15, शक संवत् 1945
05 जनवरी, 2024

निदेशक की कलम से....

प्रिय सहकर्मियों,

आम सभी को संस्थान की 47वीं वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

संस्थान के लिए यह वर्ष अत्यंत गौरवपूर्ण है। भारत की जी-20 अध्यक्षता के अंतर्गत, यू-20 के लिए नोडल मंत्रालय के रूप में आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) को यू-20 का तकनीकी सचिवालय नियुक्त किया गया है। इसी के अंतर्गत अहमदाबाद की अध्यक्षता में छठवां यू-20 सम्मेलन आयोजित किया गया। इसके सफल आयोजन पर आयुक्त, अहमदाबाद नगर निगम ने यू-20 तकनीकी सचिवालय के रूप में राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान द्वारा प्रदान किए गए अमूल्य योगदान और अटूट समर्थन के लिए अपने पत्र के माध्यम से हार्दिक सराहना व्यक्त की तथा कहा कि यू-20 तकनीकी सचिवालय के रूप में रा.न.का.सं. वास्तव में यू-20 आयोजनों के छठे चक्र, विशेष रूप से शेरपा बैठक और मेयरल शिखर सम्मेलन के पीछे का 'दिमाग' था।

इसके साथ ही मैं आप लोगों से यह भी साझा करना चाहती हूँ कि रा.न.का.सं. 'वैश्विक दक्षिण में सतत और समावेशी शहरी विकास' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक ज्ञान भागीदार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम का आयोजन मानव विकास संस्थान द्वारा 10 से 12 अगस्त 2023 तक नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में किया गया। सम्मेलन के समर्थन में, रा.न.का.सं. ने हमारे कर्मचारियों और सम्मानित भागीदारों दोनों से शोध पत्रों के लिए एक आउटरीच का समर्थन करके सक्रिय रूप से योगदान दिया है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मैं उन सभी सहयोगियों को बधाई देना चाहूंगी जिनके शोध पत्रों की समीक्षा की गई तथा जिन्हें सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिए स्वीकार किया गया।

अपने हिंदी भाषी पाठकों के लिए इस छमाही, जुलाई-दिसम्बर 2023 की गृहपत्रिका 'संवाद' का विषय 'जल- सुरक्षा एवं जलवायु वित्तपोषण' सुनिश्चित किया गया है। इस अंक में प्रस्तुत सामग्री 'जल- सुरक्षा एवं जलवायु वित्तपोषण' के विषय पर लेख आपका ज्ञानवर्धन करेंगे।

आप सभी को 'संवाद' का यह अंक सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है तथा साथ ही आशा करती हूँ कि राजभाषा नीति के अनुपालन के अंतर्गत आरंभ की गई गृहपत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ देश में चल रही महत्वपूर्ण गतिविधियों से भी आपको परिचित करवाती रहेगी। मेरा उद्देश्य गृहपत्रिका का प्रकाशन केवल औपचारिकता मात्र नहीं अपितु हिंदी पाठकों को संस्थान की शहरी गतिविधियों से भी अवगत करवाना है।

'संवाद' के इस अंक में संस्थान के कार्मिकों की कहानियाँ, लेख एवं कविताओं को भी सम्मिलित किया गया है। इस संदेश के माध्यम से संस्थान के समस्त कार्मिकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान करें। हमारा प्रयास है कि 'संवाद' पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने नए रूप में प्रस्तुत किया जा सके और प्रत्येक अंक सहेजकर रखने योग्य हो, जिसके लिए 'संवाद' की टीम बधाई की पात्र है।

मैं ईश्वर से आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य तथा सपरिवार कुशलता एवं संपन्नता की कामना करती हूँ।

डा. देबोलीना कुण्डू
निदेशक (अ.प्र.) रा.न.का.सं.

जल सुरक्षा सुनिश्चित करना रेसिलिएंट शहरी अर्थव्यवस्थाओं की आधारशिला



जल सुरक्षा सुनिश्चित करना रेसिलिएंट शहरी अर्थव्यवस्थाओं की आधारशिला

सुरक्षित पेयजल की सुलभता एक गंभीर वैश्विक चिंता का विषय है, लगभग दो अरब लोगों के पास इसकी कमी है, और दुनिया की लगभग आधी आबादी हर साल किसी न किसी समय पानी की गंभीर कमी का सामना करती है। जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि के कारण ये चुनौतियाँ और भी बदतर होने की आशंका है। इसके अतिरिक्त, दुनिया भर में 44% घरेलू अपशिष्ट जल का सुरक्षित रूप से शोधन नहीं किया जाता है, जिससे 3 अरब से अधिक लोगों को हानिकारक प्रदूषकों के संपर्क में आने का खतरा है। बाढ़ और सूखे जैसी जल-संबंधी प्राकृतिक आपदाओं ने पिछले दो दशकों में 3 अरब से अधिक लोगों को प्रभावित किया है, जिससे अत्यधिक आर्थिक क्षति हुई है। जल सुरक्षा एक बहुआयामी चुनौती है जिसके लिए समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, जहाँ वर्तमान में वैश्विक आबादी का 56% निवास करता है। इस प्रवृत्ति के जारी रहने की आशा है, जिससे 2050 तक शहरी आबादी दोगुनी हो जाएगी। दुर्भाग्य से, सुरक्षित पेयजल की कमी वाले शहरवासियों की संख्या 2000 और 2021 के बीच पहले ही दोगुनी हो गई है। इसका समाधान करने के लिए, शहरी जल प्रबंधन को स्रोत संरक्षण, विश्वसनीय जल आपूर्ति, अपशिष्ट जल उपचार और बाढ़ प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

जल सुरक्षा एक गंभीर वैश्विक मुद्दा है, विशेष रूप से तेजी से जनसंख्या वृद्धि का अनुभव करने वाले शहरी क्षेत्रों में। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एकीकृत जल प्रबंधन आवश्यक है और यह अधिक सतत, चक्रीय जल संसाधन प्रबंधन की ओर परिवर्तन के लिए क्षमता प्रदान करता है। यह लेख एसडीजी 6 ग्लोबल एक्सेलरेशन फ्रेमवर्क जैसी वैश्विक पहलों के साथ तालमेल बिठाते हुए शहरी जल प्रबंधन को मजबूत करने की कार्यनीतियों की पड़ताल करता है।

सतत विकास लक्ष्य 6 (एसडीजी 6) के संकेतकों पर प्रगति का उपयोग अक्सर जल सुरक्षा के उपाय के रूप में किया जाता है, यह पहचानना आवश्यक है कि यह अवधारणा एसडीजी 6 के दायरे से परे फैली हुई है। इसके अलावा, इन संकेतकों को राष्ट्रीय स्तर पर मापा जाता है, जो विशिष्ट मुद्दों को शहर के स्तर पर छिपा सकता है। देशों के भीतर शहरी जल सुरक्षा का व्यापक आकलन करने के लिए, मूल्यांकन प्रणालियों को डिजाइन करना समझदारी

है जो एकीकृत जल प्रबंधन के चार आयामों के बीच समन्वय को शामिल करती है:

जल संसाधन और पारिस्थितिकी तंत्र, जल आपूर्ति, प्रयुक्त पानी और जल निकासी, और बाढ़ प्रबंधन। कई मौजूदा मूल्यांकन प्रणालियाँ इस उद्देश्य के लिए मॉडल के रूप में काम कर सकती हैं।

एसडीजी संकेतकों के आधार पर जी20 देशों के आकलन से उल्लेखनीय निष्कर्ष सामने आए हैं। जबकि बीस में से नौ देश शहरी आबादी के लिए सुरक्षित पेयजल की सुलभता के 100% कवरेज का दावा करते हैं, अन्य सभी देश 95% से अधिक कवरेज की रिपोर्ट करते हैं। इसी प्रकार, सभी G20 देशों में बुनियादी और सुरक्षित रूप से प्रबंधित स्वच्छता तक शहरी पहुंच के लिए 80% से अधिक कवरेज की सूचना दी गई है।

हालाँकि, शहरी घरेलू अपशिष्ट जल शोधन के संबंध में, बीस में से केवल सात देश 80% या उच्च शोधन दर की रिपोर्ट करते हैं, जो सुधार की पर्याप्त गुंजाइश का संकेत देता है। महत्वपूर्ण चिंता यह है कि अधिकांश G20 देशों में शोधित पानी का पुनः उपयोग कम किया जाता है, जबकि कुछ देशों में शोधन की दर उच्च है। उदाहरण के लिए, फ्रांस, इटली, चीन, जर्मनी और यूके जैसे देश 95% से अधिक उपयोग किए गए पानी का शोधन करते हैं, फिर भी उनके पुनः उपयोग का प्रतिशत इटली और जर्मनी में 2-3% से लेकर चीन और फ्रांस में 17-18%, यूके में 8% तक है। उपयोग किए गए शोधित पानी का कम उपयोग एक चूका हुआ अवसर है, विशेष रूप से पानी की कमी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए।

जल संबंधी आपदाएँ, विशेष रूप से बाढ़, सभी G20 देशों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती उत्पन्न करती हैं, जिनमें चीन, भारत, इंडोनेशिया और जापान की आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा बाढ़ की चपेट में है। जैसे-जैसे शहरीकरण हो रहा है, इन देशों के घनी आबादी वाले शहरों में शहरी आबादी के लिए खतरा अधिक स्पष्ट हो गया है। इसलिए, एकीकृत जल प्रबंधन ढांचे के हिस्से के रूप में शहरी बाढ़ प्रबंधन कार्यनीतियों को विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तेजी से स्पष्ट होने के साथ, पारंपरिक जल प्रबंधन प्रोटोकॉल अब उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते हैं। शहरी क्षेत्रों को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढलना होगा। हालाँकि, कई

शहरों और देशों में एकीकृत जल प्रबंधन में परिवर्तन धीमा रहा है। इस निष्क्रियता में कई कारक योगदान करते हैं:

- धुंधला शहरी-ग्रामीण इंटरफ़ेस: धुंधला शहरी-ग्रामीण इंटरफ़ेस विस्तारित उप-शहरी क्षेत्र जल प्रबंधन के लिए सीमाओं के सीमांकन को चुनौती देते हैं, जिससे जल स्रोतों के स्थायी उपयोग और जल आपूर्ति के कानूनी प्रावधान प्रभावित होते हैं।
- तीव्र शहरीकरण: शहर पानी की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं, जिससे नवोन्मेषी दृष्टिकोण के लिए बहुत कम जगह बची है।
- जागरूकता की कमी: छोटे शहरों में एकीकृत जल प्रबंधन के लाभों के बारे में जागरूकता और ज्ञान की कमी है, जिसमें मुख्य रूप से जल आपूर्ति के इंजीनियरिंग पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है।
- ट्रेड-ऑफ को संभालना: जल प्रबंधकों के पास अक्सर आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच विवादास्पद ट्रेड-ऑफ को प्रबंधित करने के कौशल की कमी होती है, जो पारिस्थितिक विचारों की कीमत पर आर्थिक विकास को प्राथमिकता देते हैं।
- संस्थागत साइलो: सरकारी संस्थानों के भीतर विखंडन और समन्वय की कमी एकीकृत जल प्रबंधन कार्य नीतियों के कार्यान्वयन में बाधा डालती है।
- इन चुनौतियों का समाधान करना और एकीकृत जल प्रबंधन को अपनाना सतत और कुशल जल संसाधन प्रबंधन में अंतराल को कम करने के लिए केंद्र है, जिससे मानवीय, आर्थिक और विकास संबंधी चुनौतियाँ कम हो जाती हैं। एकीकृत जल प्रबंधन एक सतत प्रक्रिया है, जो गतिशील शहरी जरूरतों और जलवायु परिवर्तन और महामारी जैसी उभरती चुनौतियों के अनुकूल है। यह एक ट्रांसडिसिप्लिनरी दृष्टिकोण की मांग करता है जो मुख्य विशेषज्ञता से परे तक फैला हो। प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए, शहरों को इस आठ सूत्री एजेंडे पर विचार करना चाहिए:
- जल प्रबंधकों की भूमिका की फिर से कल्पना करें: भविष्य के जल प्रबंधकों को जल प्रबंधन को व्यापक रूप से संबोधित करने के लिए, पारंपरिक इंजीनियरिंग से आगे बढ़ते हुए, ट्रांसडिसिप्लिनरी ज्ञान से लैस करें। जल-संबंधी एजेंसियों के बीच प्रणाली, सोच और सहयोग को बढ़ावा देना।
- एकीकृत शहरी जल प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए शहरी नियोजन उपकरणों का लाभ उठाएं: प्राकृतिक संसाधनों की कीमत पर आर्थिक विकास से स्थायी विकास की ओर बढ़ते हुए, शहर की विकास कार्य नीतियों में एकीकृत जल

प्रबंधन को एकीकृत करने के लिए मास्टर प्लान और विकास योजनाओं का लाभ उठाएं।

- शहरों के भीतर डेटा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करें: उच्च गुणवत्ता में निवेश करें, शहरी जल प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर उच्च गुणवत्ता के सुलभ डेटा में निवेश करें। सूचित निर्णय लेने में सहायता करने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी विघटनकारी प्रौद्योगिकियों को अपनाने में सक्षम बनाने के लिए एक केंद्रीकृत डेटाबेस स्थापित करें।
- शहरी जल प्रबंधन में प्रकृति-आधारित समाधानों को एकीकृत करें: जल प्रबंधन कार्य नीतियों में आर्द्रभूमि और शहरी जंगलों जैसे प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को एकीकृत करें। अनेक लाभों का दोहन करने के लिए शहर की नीतियों के भीतर प्रकृति-आधारित समाधान को मुख्यधारा में लाना।
- मोनो-फंक्शनल से मल्टी-फंक्शनल बुनियादी ढांचे में बदलाव : पानी से संबंधित सेवाओं से परे कई लाभ प्रदान करने के लिए जल बुनियादी ढांचे की फिर से कल्पना करें। जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन को संबोधित करने के लिए हरित और बहु-कार्यात्मक बुनियादी ढांचे में निवेश करें।
- सामाजिक और मानव पूंजी में निवेश करें: शहरी जल क्षेत्र के सह-प्रबंधन में नागरिकों को सक्रिय रूप से शामिल करें। दर्शकों से सक्रिय प्रतिभागियों की ओर बढ़ते हुए, समर्पित सहभागिता पहलों के माध्यम से जल-संवेदनशील समुदायों और नागरिकों को बढ़ावा देना।
- गैर-पारंपरिक वित्तपोषण स्रोतों का अन्वेषण करें: पूंजी-प्रधान जल बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं को निधि देने के लिए व्यवहार्यता गैप फंडिंग, वैल्यू कैप्चर्ड फाइनेंस और नगरपालिका बांड जैसे वैकल्पिक वित्तपोषण स्रोतों की तलाश करें।
- शहर की साझेदारियों और नेटवर्क को प्रोत्साहित करें: क्षमता निर्माण, सहकर्मी शिक्षण और अनुभव साझा करने के लिए शहरों के बीच साझेदारी और नेटवर्क स्थापित करें। संघीय सरकारें इन नेटवर्कों की स्वायत्तता सुनिश्चित करते हुए उन्हें सुविधा प्रदान कर सकती हैं।

टिप्पणी: “जल सुरक्षा सुनिश्चित करना”, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान- अर्बन 20 तकनीकी सचिवालय पर अर्बन 20 वाइट पेपर से सारांश लिया गया है।

स्रोत : ई-गॉव, अक्तूबर 2023, खण्ड 19,

अंक 15 से लिया गया है।

हिंदी अनुवाद : पूनम मल्होत्रा

रेसिलिएंट शहरों के विकास के लिए जलवायु वित्त की शुरूआत

वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के विस्मयकारी 75% का स्रोत शहरी क्षेत्र हैं, जबकि 2050 तक विश्व की 70% आबादी शहरी क्षेत्रों में शामिल होने की आशा है। शहरों को उच्च तापमान, समुद्र के बढ़ते स्तर, चरम मौसम और अनियमित वर्षा पैटर्न जैसे तत्काल खतरों का सामना करना पड़ रहा है। यह चिंताजनक परिदृश्य जलवायु परिवर्तन के निकटवर्ती प्रभावों को कम करने और अनुकूलित करने के लिए पर्याप्त वित्तीय निवेश की मांग करता है। वित्तीय आवश्यकताएँ शहर के आकार, मौजूदा बुनियादी ढांचे और विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर भिन्न होती हैं। बहरहाल, अनुमान है कि शहरी जलवायु-संबंधी परियोजनाओं के लिए 2030 तक वैश्विक स्तर पर लगभग 29.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त, 2030 तक बाहरी स्रोतों से जलवायु वित्त में लगभग 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर वार्षिक जुटाना आवश्यक है, विशेष रूप से उभरते बाजारों और विकासशील देशों पर ध्यान केंद्रित करना।

जलवायु वित्त की अवधारणा 1992 में स्थापित जलवायु परिवर्तन पर यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यू.एन.एफ.सी.सी.सी.) के साथ उत्पन्न हुई। इस ढांचे ने जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में राष्ट्रों की विभिन्न क्षमताओं और जिम्मेदारियों को मान्यता देते हुए “कॉमन बट डिफरेंशियेटेड रिस्पॉन्सिबिलिटीस” (सी.बी.डी.आर.) के सिद्धांत को पेश किया। इस सिद्धांत को क्योटो प्रोटोकॉल, कोपेनहेगन समझौते और पेरिस समझौते जैसे क्योटो प्रोटोकॉल, कोपेनहेगन समझौते और पेरिस समझौते जैसे बाद के समझौतों के माध्यम से प्रमुखता मिली है, जिसमें विकासशील देशों में असमानताओं के कारण अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सहायता की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। जलवायु परिवर्तन में योगदान और इसे प्रबंधित करने की उनकी क्षमता, जलवायु वित्त जुटाने के लिए कई पहल और तंत्र तैयार किए गए हैं, जिनमें एडॉप्टेशन फंड, ग्लोबल इनवायरमेंट फेसिलिटी (जी.ई.एफ.), ग्रीन क्लाइमेट फंड और विशेष जलवायु निधि जैसे स्थापित संस्थान शामिल हैं।

इन संस्थागत स्रोतों के अलावा, जलवायु वित्त के लिए विभिन्न वैकल्पिक चैनल मौजूद हैं जिनमें नॉन - बैंकिंग फाइनेंशियल

कॉर्पोरेशंस (एन.बी.एफ.सी.एस.), एक्सटर्नल कमर्शियल बोरोइंग्स (ई.सी.बी.), निजी इक्विटी निवेश और डेवलपमेंट फाइनेंस इंस्टीट्यूशंस (डी.एफ.आई.) शामिल हैं। निवेश जुटाने के लिए शहरों में सहायक नीति वातावरण को बढ़ावा देना और हरित बांड और सार्वजनिक-निजी भागीदारी जैसे नवीन वित्तपोषण तंत्र की खोज करना आवश्यक है। अन्य शहरों, अंतराष्ट्रीय संगठनों, वित्तीय संस्थानों और निजी क्षेत्र के साथ सहयोग निवेश की संभावनाओं को बढ़ा सकता है और ज्ञान साझा करने को बढ़ावा दे सकता है। यह व्यापक दृष्टिकोण विशेष रूप से विकासशील देशों के शहरों में जलवायु वित्त को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता को संबोधित करना चाहता है।

जलवायु के तहत वित्तपोषण विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है, जो शहरों को महत्वपूर्ण अनुकूलन और शमन परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के साधन प्रदान करता है। इन फंडिंग स्रोतों में सरकारी बजट, अंतराष्ट्रीय विकास सहायता, संस्थागत निवेशक, वाणिज्यिक बैंक, सार्वजनिक-निजी साझेदारी (पी.पी.पी.), नगरपालिका बांड, सॉवरेन ग्रीन बांड, प्रभावी निवेशक, परोपकारी संगठन और बहुपक्षीय विकास बैंक शामिल हैं। अनुदान और सब्सिडी, जिसके लिए किसी पुनर्भुगतान की आवश्यकता नहीं होती है, को राष्ट्रीय सरकारों, अंतराष्ट्रीय संगठनों और परोपकारी फाउंडेशनों से प्राप्त किया जा सकता है, जो विशेष रूप से सतत विकास में निजी क्षेत्र के निवेश को उत्प्रेरित करने के लिए उपयोगी है।

विकास बैंक, जैसे क्षेत्रीय और अंतराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान, बुनियादी ढांचे के विकास हेतु ऋण, अनुदान तथा तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं। वाणिज्यिक बैंक तथा वित्तीय संस्थान शहरी परियोजनाओं हेतु ऋण या क्रेडिट सुविधाएँ भी प्रदान कर सकते हैं। हरित बांड तथा जलवायु बांड जैसे सतत ऋण उपकरणों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो पर्यावरण तथा सामाजिक रूप से जिम्मेदार वित्तपोषण में रुचि रखने वाले निवेशकों को आकर्षित कर रही है। जलवायु बांड, विशेष रूप से, कम कार्बन अर्थव्यवस्था में परिवर्तन का समर्थन करते हुए, जलवायु संबंधी पहलों के लिए धन जुटाने हेतु तैयार किए गए हैं। सार्वजनिक-निजी साझेदारी एक अन्य रास्ते का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ निजी संस्थाएँ फंडिंग,



विशेषज्ञता और संसाधनों का योगदान करती हैं, साथ ही शहर बुनियादी ढांचे का स्वामित्व बरकरार रखता है। जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने तथा रेसिलिएंट शहरों का निर्माण करने के लिए तत्काल, समन्वित और नवीन प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता है।

जलवायु वित्त तक पहुंच एक बहुआयामी प्रयास है जिसके लिए राष्ट्रीय से लेकर स्थानीय तक, शासन के विभिन्न स्तरों पर एक सुव्यवस्थित दृष्टिकोण और क्षमताओं की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय स्तर पर, जलवायु संबंधी कार्रवाइयों को व्यापक विकासात्मक प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए। इसमें कठोर आकलन शामिल है, जिसमें जलवायु परिवर्तन परिदृश्य, उत्सर्जन आधार रेखाएँ और प्रभाव अनुमान शामिल हैं। जोखिम प्रबंधन तंत्र और निवेश योग्य परियोजना संरचना अभिन्न घटक

हैं। तूफानी जल, बाढ़ प्रबंधन और स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं जैसे क्षेत्रों के लिए सार्वजनिक वित्तपोषण महत्वपूर्ण हो जाता है। एक विविध राष्ट्रीय ढांचा आवश्यक है, जो परियोजना संदर्भ और जरूरतों के आधार पर विभिन्न वित्तपोषण विकल्पों को सक्षम बनाता है। इस ढांचे के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:

जलवायु कार्रवाई का समर्थन करने और हितधारक समन्वय को बढ़ावा देने के लिए मजबूत संस्थागत संरचनाओं, सुशासन, नीतियों और विनियमों की स्थापना करना। शहरों को ऐसी नीतियां और नियम बनाने चाहिए जो जलवायु कार्रवाई को प्रोत्साहित करें, कर प्रोत्साहन प्रदान करें और स्थिरता को बढ़ावा दें।

शहरों की क्षमता का निर्माण महत्वपूर्ण है, जिसमें जलवायु विज्ञान,

नवीकरणीय ऊर्जा, शहरी नियोजन, परिवहन, वित्तीय प्रबंधन क्षमताओं और साख विकास में तकनीकी विशेषज्ञता शामिल है।

शहरों को वित्तीय व्यवहार्यता, स्थिरता और जलवायु लक्ष्य सरेखण का प्रदर्शन करते हुए, अपनी जलवायु कार्यनीतियों के अनुरूप बैंकयोग्य हरित परियोजनाओं की एक पाइपलाइन विकसित करनी चाहिए। इसमें जलवायु परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण लेकिन परंपरागत रूप से वित्तीय रूप से व्यवहार्य मानी जाने वाली परियोजना को संबोधित करना शामिल है।

साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने के लिए सटीक, अद्यतन डेटा तक सुगमता महत्वपूर्ण है, जिसके लिए व्यापक डेटा संग्रह, विश्लेषण और प्रसार की आवश्यकता होती है।

साझेदारी और नेटवर्क बनाना सर्वोपरि है, जिसमें ज्ञान के आदान-प्रदान और फंडिंग की सुगमता को सुविधाजनक बनाने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, वित्तीय संस्थानों और अन्य शहरों के साथ सहयोग शामिल है।

परियोजना योजना और कार्यान्वयन में हितधारकों और स्थानीय समुदायों को शामिल करना, आम सहमति, परियोजना स्वीकृति और समुदाय-विशिष्ट परियोजना सरेखण को बढ़ावा देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

वित्तीय, राजनीतिक, तकनीकी, पर्यावरणीय और परिचालन चुनौतियों सहित अंतर्निहित जोखिम के कारण शहरी बुनियादी ढांचे में जलवायु निवेश को जोखिम से मुक्त करना आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों में जलवायु वित्त को आकर्षित करने के लिए सक्रिय उपाय महत्वपूर्ण हैं। इसमें स्थिर नीति और नियामक ढांचे विकसित करना, संपूर्ण जोखिम मूल्यांकन करना तथा जोखिम को कम करने और स्थानांतरित करने के लिए ग्रीन बांड और जलवायु बीमा जैसे नवीन वित्तीय उपकरणों का उपयोग करना शामिल है। परियोजना की तैयारी में सुधार, स्थानीय क्षमता को मजबूत करना और विश्वसनीय जलवायु डेटा तक सुगमता बढ़ाना निवेशकों का विश्वास बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। स्थिरता और समावेशिता की दिशा में निवेश का मार्गदर्शन करने के लिए जलवायु परियोजनाओं की स्पष्ट वर्गीकरण करना आवश्यक है। शहरों की साख बढ़ाना एक बुनियादी कदम है, जिसमें कम

कार्बन, सतत और जलवायु रेसिलिएंट परियोजनाओं के लिए वित्त पोषण तक सुगमता को सक्षम करने के लिए व्यापक सुधारों की आवश्यकता है। पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ई.एस. जी.) ढांचे को अपनाने और जलवायु कार्यनीतिनीति के अनुरूप हरित परियोजनाओं की पाइपलाइन की पहचान करने से निवेशकों का विश्वास और बढ़ सकता है।

तकनीकी सहायता कार्यक्रम परियोजना डिजाइन, जलवायु वित्तपोषण विकल्प और व्यावहारिक लेनदेन समर्थन में सहायता कर सकते हैं। विशेषज्ञ संगठन को अपनी तकनीकी जानकारी का योगदान देना चाहिए और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देते हुए अनुदान देना चाहिए। क्रेडिट रेटिंग को सार्वजनिक, स्थानीय और वाणिज्यिक बैंकों के लिए क्षमता वृद्धि की आवश्यकता के लिए जलवायु जोखिमों और शमन उपायों पर विचार करना चाहिए। विशेष रूप से विकासशील देशों में सहकर्मी शिक्षण तथा निरंतर, क्रॉस-सेक्टरल क्षमता-निर्माण प्रयास, शहरों की जलवायु वित्त जटिलताओं से निपटने तथा वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के साथ परियोजनाओं को सरेखित करने की क्षमता बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण हैं।

रेसिलिएंट शहरों के लिए जलवायु वित्त की शुरुआत विकास की दिशा में एक जटिल लेकिन आवश्यक कदम है। जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियाँ तत्काल, समन्वित तथा नवीन प्रतिक्रियाओं की माँग करती हैं। यह सुनिश्चित करके कि शहरी क्षेत्रों में जलवायु-उत्तरदायी परियोजनाओं के लिए आवश्यक संसाधन, ज्ञान और समर्थन है, हम बदलती जलवायु के लिए सतत, संपन्न, रेसिलिएंट शहर बना सकते हैं। जलवायु वित्त केवल एक निवेश नहीं है; यह सभी के लिए बेहतर, अधिक सतत भविष्य की प्रतिबद्धता है..

नोट: जलवायु वित्त में तेजी लाने पर अर्बन20 श्वेत पत्र से निकाला गया सारांश, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान- अर्बन20 तकनीकी सचिवालय

स्रोत : ई-गॉव, अक्टूबर 2023, खण्ड 19, अंक 15 से लिया गया है।

हिंदी अनुवाद : तनु, सहायक अनुवादक

संस्थान में जुलाई-दिसंबर, 2023 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यावयन एवं प्रोत्साहन संबंधित गतिविधियाँ

- संस्थान में हिंदी पखवाड़े के दौरान इस तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 26.09.2023 को पूर्वाह्न 11:00 बजे आरंभ किया गया। कार्यशाला का विषय –“सूचना-प्रौद्योगिकी - हिंदी में नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ” था। जिसमें व्याख्यान हेतु श्री केवल कृष्ण, सेवानिवृत्त वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में संस्थान के 40 कार्मिकों ने भाग लिया। संस्थान के समस्त कार्मिकों ने आमंत्रित वक्ता के द्वारा दी गई उपयोगी जानकारी से अपना ज्ञानवर्धन किया तथा अपने सवालियों के माध्यम से अपनी शंकाओं का समाधान किया।
- संस्थान में समाप्त तिमाही जुलाई-सितंबर, 2023 की प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन तथा मंत्रालय को हार्ड प्रति के रूप में प्रेषित कर दी गई है।
- संस्थान में जुलाई-सितंबर, 2023 के दौरान किए गए राजभाषा कार्यावयन संबंधित कार्यों की समीक्षा करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन 22.09.2023 को श्री हितेश वैद्य, निदेशक, रा.न.का.सं. की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में मंत्रालय से श्रीमती संतोष सिलपोकर, निदेशक (राजभाषा) को आमंत्रित किया गया था।
- नराकास की बैठक दिनांक 07.11.2023 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। जिसमें संस्थान से श्रीमती पूनम मल्होत्रा तथा तनु, अनुवाद सहायक ने भाग लिया।
- संस्थान में इस तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19.12.2023 को दोपहर 12:00 बजे आयोजित किया जाना सुनिश्चित हुआ है। कार्यशाला का विषय – “टिप्पण प्रारूपण एवं राजभाषा नीति” है। जिसमें व्याख्यान हेतु श्री सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी सेवानिवृत्त उप निदेशक (राजभाषा) आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में संस्थान के 36 कार्मिकों ने भाग लिया।
- संस्थान में समाप्त तिमाही अक्टूबर-दिसंबर, 2023 की प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग को मंत्रालय को हार्ड प्रति के रूप में प्रेषित कर दी गई है।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की राजभाषा प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही अवधि 1 अप्रैल, 2023 से 30 सितंबर, 2023 तक की छमाही रिपोर्ट भेजी गई थी।
- संस्थान में हिंदी पत्रिका ‘संवाद’ का जनवरी-जून, 2023 का अंक ई-प्रकाशन कर दिया गया है जिसका विषय यू-20 है। इस पत्रिका का विमोचन निदेशक महोदय द्वारा पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान किया गया। संस्थान में ‘संवाद’ हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कर लाभार्थियों को भेज दिया गया है। जिसे संस्थान की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी अपलोड कर दिया गया है।
- संस्थान की वेबसाइट का द्विभाषीकरण का कार्य आऊटसोर्स कर दिया गया है जो कि सुश्री तनु, राजभाषा फैलो की देखरेख में किया जा रहा है। वेबसाइट की हिंदी सामग्री अपलोड कर दी गई है तथा शेष कार्य प्रगति पर है।
- संस्थान में अक्टूबर-दिसंबर, 2023 के दौरान किए गए राजभाषा कार्यावयन संबंधित कार्यों की समीक्षा करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की समिति का पुर्नगठन किया गया है।
- संस्थान में 14-29 सितंबर, 2023 को हिंदी पखवाड़ा मनाया गया था। जिसका शभारंभ तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पुणे (महाराष्ट्र) में किया गया था जिसमें संस्थान से दो कार्मिक श्रीमती पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक, तथा मौ. शाकिब, हिंदी टंकक द्वारा भाग लिया गया था। संस्थान में पखवाड़े के दौरान (हिंदी शब्द अंताक्षरी, हिंदी निबंध, हिंदी कविता लेखन, श्रुतलेख) प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिसमें संस्थान के कार्मिकों ने भाग लिया तथा प्रतियोगिता में विजेता को नकद पुरस्कार तथा एक प्रमाणपत्र भी जारी किया गया।
- संस्थान में “हिंदी पखवाड़ा विशेषांक” पत्रिका का प्रकाशन कर लाभार्थियों को भेज दिया गया है। जिसे संस्थान की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी अपलोड कर दिया गया है।
- संसदीय राजभाषा निरीक्षण अपेक्षित है। अतः प्रश्नावली बनाकर प्रेषित की जा चुकी है।

जुलाई-दिसंबर, 2023 के दौरान आयोजित राजभाषा गतिविधियाँ



वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

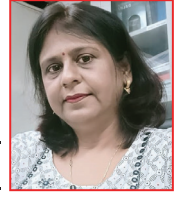
The file in question is placed below	अपेक्षित विचाराधीन फाइल प्रस्तुत है
This is to certify	प्रमाणित किया जाता है
This is to inform	सूचित किया जाता है
Till further orders	अगले आदेश होने तक
To	सेवा में
To comply with	अनुपालन करने हेतु/पालन करने हेतु
To impose restrictions	पाबंदी लगाना, प्रतिबंध लगाना
To initiate action	कार्रवाई आरंभ करना
To the contrary	इसके विपरीत, इसके प्रतिकूल
To the extent of	की सीमा तक
Under dispute	विवादग्रस्त
Under his signature and seal	उनके हस्ताक्षर एवं मुहर के तहत
Under mentioned	निम्नलिखित
Under reference	प्रसंगाधीन
Undersigned is directed to	अधोहस्ताक्षरी को निदेश हुआ है कि आपके
Until further order	अगले आदेश तक
Up to date	अद्यतन
Valedictory address	समापन भाषण, विदाई भाषण
We are not concerned with this	इसका हमसे संबंध नहीं है
Will you please state	कृपया बताएँ
With a view to	की दृष्टि से
With concurrence of	की सहमति से
Without fail	अवश्य, बिना चूक
With reference to	के संबंध में, के प्रसंग में, के सिलसिले में
With regards	सादर, शुभकामनाओं सहित
With regard to	के बारे में, के संबंध में
With respect to	के संबंध में
Your faithfully	भवदीय
Your sincerely	भवदीय
Your truly	भवदीया

प्रशासनिक शब्दावली

Manpower	जनशक्ति	समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों की जनशक्ति में फेरबदल संभव है।
Manual	नियमावली	राजभाषा विभाग में नियमावली पुस्तक के अनुसार कार्य किया जाता है।
Maternity leave	प्रसूति अवकाश	कार्यालय में गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को नियम के अनुसार प्रसूति अवकाश प्रदान की जाती है।
Medical leave	चिकित्सा अवकाश	कार्यालय में सभी कर्मचारियों को चिकित्सा अवकाश लेने का अधिकार है।
Meeting	बैठक	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सभी अधिकारियों का भाग लेना अनिवार्य है।
Memorandum	ज्ञापन	कृपया इस ज्ञापन को ध्यान से पढ़ें और इसे सौंपें।
Ministry	मंत्रालय	आपकी नियुक्ति मंत्रालय द्वारा की गई है।
Minutes	कार्यवृत्त	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का कार्यवृत्त मंत्रालय को भेज दिया गया है।
Monitoring	अनुवीक्षण	यह कार्य आपके अनुवीक्षण में किया जाएगा।
Motion	प्रस्ताव	बैठक में सभी अधिकारियों ने अपना-अपना प्रस्ताव रखा।
Motive	उद्देश्य	यह कार्यालय के उद्देश्य हेतु टैक्सी/बस किराये की सेवाओं के लिए आपकी कोटेशन दरों के संदर्भ में है।
Necessary action	आवश्यक कार्रवाई	यह कार्यवृत्त आपके अवलोकन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित किया जा रहा है।
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण पत्र	रा.न.का.सं. में कार्यरत श्री कपिल जी के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र।
Note	नोट/टिप्पण	कार्यालय में बहुत से कर्मचारी हिंदी भाषा में भी नोट लिखते हैं।
Notice	सूचना	कार्यालय में समय-समय पर होने वाली गतिविधियों की सूचना सभी कर्मचारियों को प्रदान की जाती है।
Objection	आपत्ति	रा.न.का.सं. को उनकी यात्रा पर कोई आपत्ति नहीं है।
Offer of appointment	नियुक्ति प्रस्ताव	हमें आपको संविदात्मक नियुक्ति का प्रस्ताव देते हुए प्रसन्नता हो रही है।
Office-hours	कार्यालय-समय	कृपया हमें कार्यालय-समय के उपरांत कार्य करने की अनुमति प्रदान करें।
Office memorandum	कार्यालय-ज्ञापन	यह विषय कार्यालय ज्ञापन सं. ए-***** के संदर्भ में है।
Office order	कार्यालय आदेश	जनवरी, 2023 से दिसंबर, 2023 के दौरान जारी किए गए कार्यालय आदेश।
Officer	अधिकारी	आपकी नियुक्ति परियोजना अधिकारी के पद पर की गई है।
Opportunity	अवसर	हमें आपको प्रशिक्षता का अवसर प्रदान करते हुये प्रसन्नता हो रही है।
Participate	भाग लेना	निबंध प्रतियोगिता में सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।
Pass	पास/अनुमति पत्र	फोटो पास हेतु अनुरोध
Percent	प्रतिशत	हिंदी में किए गए कार्यों का प्रतिशत

“जल ही जीवन है” जल के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल है...

पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक



“जल है तो कल है”, बावजूद इसके जल बेवजह बर्बाद किया जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल-संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। हम हमेशा से सुनते आये हैं “जल ही जीवन है”। जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना नहीं की जा सकती, जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमूल्य संसाधन है जल, या यूँ कहें कि यही सभी सजीवों के जीने का आधार है जला धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, किन्तु इसमें से 97% पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3% है। इसमें भी 2% पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1% पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है।

नगरीकरण और औद्योगिकीकरण की तीव्र गति व बढ़ता प्रदूषण तथा जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। जैसे जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जाती है, लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे जैसे गर्मी का सीजन निकल जाये बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल संरक्षण के प्रति बेरुखी अपनाये रहते हैं।

आगामी वर्षों में जल संकट की समस्या और अधिक विकराल हो जाएगी, ऐसा मानना है विश्व आर्थिक मंच का। इसी संस्था की रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि दुनियाभर में 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग पानी की कमी की संकटों से जूझ रहे हैं। 22 मार्च को मनाया जाने वाला ‘विश्व जल दिवस’ महज औपचारिकता नहीं है, बल्कि जल संरक्षण का संकल्प लेकर अन्य लोगों को इस संदर्भ में जागरूक करने का एक दिन है।

शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता और संबंधित ढेरों समस्याओं को जानने के बावजूद देश की बड़ी आबादी जल संरक्षण के प्रति सचेत नहीं है। जहां लोगों को मुश्किल से पानी मिलता है, वहां लोग जल की महत्ता को समझ रहे हैं, लेकिन जिसे बिना किसी

पेशानी के जल मिल रहा है, वे ही बेपरवाह नजर आ रहे हैं। आज भी शहरों में फर्श चमकाने, गाड़ी धोने और गैर-जरूरी कार्यों में पानी को निर्ममतापूर्वक बहाया जाता है।

प्रदूषित जल में आर्सेनिक, लौहांस आदि की मात्रा अधिक होती है, जिसे पीने से तमाम तरह की स्वास्थ्य संबंधी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में 86 फीसदी से अधिक बीमारियों का कारण असुरक्षित व दूषित पेयजल है। वर्तमान में करीब 1600 जलीय प्रजातियां जल प्रदूषण के कारण लुप्त होने के कगार पर हैं, जबकि विश्व में करीब 1.10 अरब लोग दूषित पेयजल पीने को मजबूर हैं और साफ पानी के बगैर अपना गुजारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति सरकार और आम जनता दोनों के लिए चिंता का विषय है। इस दिशा में अगर त्वरित कदम उठाते हुए सार्थक पहल की जाए तो स्थिति बहुत हद तक नियंत्रण में रखी जा सकती है, अन्यथा अगले कुछ वर्ष हम सबके लिए चुनौतिपूर्ण साबित होंगे।



पानी का हमारे जीवन में महत्व



मौ. शाकिब, हिंदी टंकक

पानी का महत्व

पृथ्वी पर 75 प्रतिशत से ज्यादा पानी है। लेकिन यह पानी पीने योग्य नहीं है। पृथ्वी पर केवल 3 प्रतिशत पानी पीने योग्य है। आज शहर के आलावा गांव में भी पानी सूखता जा रहा है। यदि आप मेरे गांव की बात करें तो, आज से 10 साल पहले 50 फुट पर पानी निकल जाता था। लेकिन आज 80 फुट पर भी साफ पानी नहीं मिलता है। आज हर किसी को समझना चाहिए कि जल का महत्व क्या है? यदि हम पानी का महत्व नहीं समझ पाए तो, आने वाले समय में पानी समाप्त हो जायेगा और इसके दोषी केवल हम होंगे।

“जल है तो हम हैं”

जल हमारे जीवन का एक अमूल्य हिस्सा है, इसके बिना हम दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। जैसे जल के बिना नदी सुख जाती है ठीक उसी तरह जल के बिना इंसान अपने महत्वपूर्ण जीविका के साधन से वंचित रह जाता है। इसलिए ये कहना गलत नहीं होगा कि “जल है तो सब हैं और जल है तो हम हैं” जल के बिना मनुष्य की क्या दुर्दशा होगी, इसका अंदाजा हम यहीं से लगा सकते हैं इसीलिए हमें चाहिए कि हम जल का कम से कम उपयोग करें और जल बचाव हेतु कदम उठाएं। साथ ही यहां हम जल कितने प्रकार के होते हैं? जल और प्राकृतिक का मानव के जीवन में क्या महत्व है?

जल और प्रकृति का मानव के जीवन में महत्व

जल बिन सूखा पड़ा है खेत - खलिहान - सूखे पड़े हैं धरती आंगन जल और प्रकृति के साथ मनुष्य का शुरू से ही गहरा नाता रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य की वजह से ही वर्षा होती है और यही वर्षा किसान के खेत खलिहान को पानी देने का भी काम करती है। इसलिए कह सकते हैं कि जल और प्रकृति के साथ मनुष्य का एक अनमोल रिश्ता है, जिसे एक किसान ही समझ सकता है क्योंकि उसकी फसल जल के कारण ही संभव हो पाती है। पहले के समय में सिंचाई के लिए लोग पूरी तरह से ही वर्षा के पानी पर ही निर्भर रहते थे। उनके पास कोई अन्य साधन की व्यवस्था नहीं होती थी। जैसे – जैसे समय बदला नए तकनीक का विकास हुआ वैसे – वैसे जल और प्राकृतिक सौंदर्य में भी बदलाव आया। लेकिन पानी और मनुष्य के संबंध में कोई बदलाव नहीं हुआ उनकी जरूरत आज भी उतनी ही है जितनी पहले हुआ करती थी बस जरूरत है

उन्हें सहेज के रखने की।

पानी पीने के फायदे

पानी हमारे शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है, जल के बिना हम जिंदा रहने के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। पानी हमें एक नई ऊर्जा देता है जिसके कारण हमारा शरीर काफी तेज गति से काम करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। जिस तरह से भोजन हमारे के लिए आवश्यक है ठीक उसी तरह पानी भी हमारे लिए आवश्यक है। पानी हमारे शरीर के लिए एक महत्वपूर्ण और जीवनदायक पेय है।

उदाहरण

जून के महीने में आपको धूप में चलते हुए अचानक प्यास लगी हुई हो और आपको पानी ना मिले तब आपको महसूस होगा कि हमारे शरीर को पानी की उस वक्त कितनी जरूरत है और तब हम मन ही मन में बस ये सोच रहे होंगे कि कहीं ना कहीं से पीने के लिए पानी मिल जाए। यही कारण है कि हमारे शरीर के लिए पानी बहुत आवश्यक और लाभदायक भी है।

पानी न पीने के नुकसान

अगर हम पानी न पिए तो हमारे शरीर में पानी की कमी हो जाएगी, इसके कारण हमारा शरीर काम करना बंद कर देगा, हमें ऐसा लगेगा जैसे हम काफी कमजोर हो गए हैं और हमारा किसी भी काम करने में मन नहीं लगेगा, अगर हम एक दिन पानी न पिए तो, हमारा गला सूख जायेगा। हमारे शरीर में पानी की कमी हो जाएगी। जिससे हमें चक्कर भी आ सकते हैं। हर इंसान को एक दिन में कम से कम 4 लीटर पानी पीना चाहिए।

जल ही जीवन है

जैसा कि हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं कि जल के बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है, जल हमारे जीवन का एक अमूल्य हिस्सा है यही कारण है कि जल और संसार के साथ जुड़ा हुआ मनुष्य को चाहिए कि वह प्रकृति, जल आदि को बहुत सहेज कर चले अन्यथा हमें उसका बुरा परिणाम भी झेलने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। आपने आते – जाते सड़कों पर, गलियों में, जल ही जीवन है का पोस्टर लगा हुआ जरूर ही देखा होगा या किसी दीवाल पर



रंगीन चित्रों के माध्यम से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ आपको दिख जाएगा जल ही जीवन है। यह इसलिए लिखा जाता है ताकि मनुष्य जल के प्रति सजग हो सके और उन्हें बिना मतलब के बर्बाद ना करें अर्थात उन्हें जितने की आवश्यकता हो उतना ही उपयोग में लाएं।

उदाहरण

अगर आपके घर में एक दिन पानी ना आए तो आप महसूस कर पाएंगे कि पानी के बिना आपका सारा काम ही रुक गया है उस समय आपके पास पीने के लिए भी पानी ना हो ऐसे में आप खुद को असहज महसूस करेंगे। अगर यही स्थिति पूरे देश में उत्पन्न हो जाए तो हम पाएंगे कि एक बड़ा हिस्सा जल से वंचित रह जाएगा।

जल के प्रकार

जल को हम तीन भागों में बांट सकते हैं 1) द्रव 2) ठोस 3) वाष्प लेकिन बाद में ये जल का ही रूप ले लेते हैं पिघल कर। इसलिए यहां ये कहना सही होगा कि जल मुख्यता : जल ही होता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे हम तीन भागों में बांटकर इसका नाम अलग-अलग रख तो दिए हैं इसका जो मूल रूप है वो पानी ही है।

पानी के स्रोत

जल को कई जगह इकट्ठा कर सकते हैं और जल को कई जगह से ले भी जा सकते हैं जैसे कुआं, नदी, नहर, तालाब, जलाशय, कुंड, आदि जगह पर हम वर्षा के पानी को इकट्ठा करके बाद में भी इसका प्रयोग कर सकते हैं।

वर्षा – वर्षा का पानी सबसे बड़ा स्रोत है। वर्षा से हमारी धरती के नीचे पानी जाता है। जिससे हमें पानी आसानी से मिल जाता है। आज वर्षा का पानी इकट्ठा करके बड़े-बड़े पानी के स्रोत बनाएं जा रहे हैं।

कुआं – पानी का सबसे अच्छा स्रोत माना जाने वाला कुआं है यहां बारिश का पानी भी इकट्ठा हो जाता है और ये पीने योग्य भी बना रहता है हमेशा।

तालाब – तालाब में अक्सर बारिश का पानी ही इकट्ठा किया जाता है ताकि उसे खेत की सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जा सके या कमल जैसे फूल को उगाने में इसका प्रयोग किया जाता है सबसे ज्यादा।

हमारे जीवन में पानी की विशेषता

पानी हमारे रोजमर्रा की जिंदगी के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। सफाई से लेकर खाना बनाने तक, कपड़े से लेकर, बर्तन साफ करने तक, नहाने से लेकर कार की धुलाई तक आदि जैसे चीजों के लिए हम आज पूरी तरह से पानी पर ही निर्भर हैं। यही कारण है कि हम दिन से लेकर रात तक हम खुद को पानी से चारों तरफ घिरा हुआ ही पाते हैं। घर हो या बाहर हर जगह हमें पानी की आवश्यकता होती ही है और इसी को पूरा करने के लिए नए-नए तरह के तकनीक का उपयोग किया जा रहा है ताकि हमें कभी पानी की कमी महसूस न हो और हर जगह हमें पानी उपलब्ध मात्रा में मिल सके। हमारे जीवन में पानी की जरूरत को देखते हुए शहरों में हर जगह पानी के कनेक्शन की व्यवस्था की गई है ताकि हम उचित साधन के साथ पानी की व्यवस्था का लाभ उठा सकें।

स्वच्छ जल का महत्व

स्वच्छ जल हमारे देश के लिए आज एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। यही कारण है कि नल की जगह आज सभी अपने घरों में पीने के लिए फिल्टर या आरो का इस्तेमाल करने लगे हैं। स्वच्छ जल हमारे लिए बहुत उपयोगी है और स्वच्छ जल आज के युवाओं की पहली मांग बन चुकी है। जिसको देखते हुए बाजार में नए-नए तरह के उत्पाद और तकनीक को उतारा जा रहा है जिससे युवा वर्ग बहुत ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। उन्हें लगता है कि इन तकनीकों की विकास की वजह से हमें सस्ते में स्वच्छ जल उपलब्ध हो जाएगा।

- **जल ही जीवन है, जल के बिना जीवन असंभव है।**
- **पृथ्वी पर 75 प्रतिशत पानी है, लेकिन पीने योग्य पानी केवल 3 प्रतिशत है।**
- **पानी इंसान के लिए नहीं, बल्कि जानवरों, पक्षी, पेड़-पौधों सभी के लिए आवश्यक है।**
- **जल के बिना हम कोई भी काम नहीं कर सकते हैं।**
- **इंसान खाने के बिना कुछ समय तक जिंदा रह सकते हैं, लेकिन जल के बिना नहीं।**
- **जल का सबसे बड़ा स्रोत झील और वर्षा है।**
- **भारत की ब्रह्मपुत्र नदी में सबसे अधिक पानी है।**
- **मानव के शरीर में लगभग 60 प्रतिशत पानी होता है। वही मस्तिष्क में 85, रक्त में 79 और फेफड़ों में लगभग 80 प्रतिशत जल होता है।**
- **जल तीन प्रकार के होते हैं :- द्रव, ठोस (बर्फ), और हवा में (अदृश्य) वाष्प।**
- **“जल है तो सब हैं और जल है तो हम हैं”**

उदाहरण:-

पीने के पानी के लिए फिल्टर का उपयोग

लोगों का मानना है कि स्वच्छ जल हमारे और हमारे शरीर के लिए लिए बहुत उपयोगी है। यही कारण है कि लगातार अब फिल्टर और आरो की मांग बढ़ रही है अब लोग नल और कुएं का पानी पीने से भी डरते हैं। कहीं उन्हें किसी तरह की बीमारी ना हो जाए उन्हें लगता है कि स्वच्छ जल हमें केवल फिल्टर या आरो ही दे सकता है। लेकिन जल की शुद्धता आरो है यह कहना गलत है। अगर पहले की बात करें तो, हमारे पास कुएं और नल स्वच्छ जल के रूप में उपलब्ध थे लेकिन आज उनकी भी क्वालिटी में कहीं ना कहीं बदलाव आ गया है जिसके चलते पानी की शुद्धता पर सवाल खड़ा होने लगे हैं।

निष्कर्ष

हमें जल का महत्व समझना बहुत जरूरी है। अगर हम जल का महत्व नहीं समझ पाए, तो आने वाले समय में पानी से करोड़ों लोग वंचित हो जायेंगे। पृथ्वी पर पीने योग्य पानी तेजी से कम हो रहा है। आज से ही हमें पानी की बचत पर विशेष रूप से ध्यान देना शुरू करना होगा। तभी आने वाले समय में हम पानी को बचा सकेंगे। हमें अपने पूरे दिन में कम से कम तथा आवश्यकतानुसार पानी का इस्तेमाल करना चाहिए।

जल संरक्षण

योगेश भट्ट, लेखाकार



आज हमारी पृथ्वी पर पीने योग्य पानी की मात्रा लगातार कम होती जा रही है और इसलिए हमें पानी की एक-एक बूंद बढ़ाने की बहुत-बहुत जरूरत है। यह बात हम हर रोज कहीं न कहीं सुनते और पढ़ते तो हैं लेकिन ध्यान नहीं देते हैं। हम में से कई लोगों को पानी का महत्व अभी तक समझ में नहीं आया है, जबकि यदि पानी अपनी इसी गति से कम होता गया और खर्च करने की यही स्थिति बनी रही तो वह दिन बिल्कुल भी दूर नहीं जब मनुष्य एक-एक बूंद पानी के लिए तरस जाएगा!

जल की एक-एक बूंद कितनी अमूल्य और महत्वपूर्ण होती है इस बात को हमारे पूर्वज उसी समय से जानते थे और समझते थे जब इस पृथ्वी पर भरपूर और पर्याप्त मात्रा में जल पाया जाता था। तब भी वे हमेशा जल के संरक्षण पर ध्यान देते थे और उसके लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग भी करते थे। भविष्य में पानी की क्या स्थिति होगी इसका शायद उन्हें अंदाजा था इसलिए लोगों को पानी का मूल्य समझाने के लिए उन्होंने इसे देवता की उपाधि भी दी थी ताकि लोग पानी को भी ईश्वर की तरह समझ कर उसका सम्मान करें और बचत करें।



आज समय के साथ-साथ जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती गई और मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया। बड़ी संख्याओं में पेड़ पौधों काट दिए गए जिनका दुष्प्रभाव वर्षा की स्थिति पर पड़ा तथा पानी संबंधित समस्याएं उत्पन्न होने लगीं। आज भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व ही पानी की भारी कमी से जूझ रहा है इसके लिए जल का संरक्षण और सर्वधान करने के लिए कई अहम कदम उठाने की बहुत जरूरत है लेकिन मनुष्य आज भी इन समस्याओं के प्रति गंभीरता से विचार नहीं कर रहा है जिससे आने वाले समय में पूरे विश्व को ही इसके दुष्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा।

जल संरक्षण के विभिन्न उपाय

जल को सुरक्षित करना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। मनुष्य यदि चाहे तो प्रतिदिन बहुत सारा पानी आसानी से बचा सकता है जिसे वह अनावश्यक रूप से इस्तेमाल करता है और या बेवजह बर्बाद करता है रोजमर्रा के कामों में पानी की जरूरत और उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता लेकिन इन कामों में पानी को समझदारी से इस्तेमाल पर जरूर ध्यान दिया जा सकता है।

सामान्य जीवन में पानी को कैसे सुरक्षित किया जा सकता है इस बात को एक बच्चा भी जानता है। लेकिन हमारी गलत आदतों की वजह से हम इस बात को समझते हुए भी नजरअंदाज कर रहे हैं दैनिक कार्यों में पानी की कटौती आसानी से की जा सकती है। इसके अलावा हम अपने वाहनों को धोने के लिए आंगन में छिड़काव करने के लिए और ऐसे ही कई कामों में भी खर्च होने वाले पानी की मात्रा पर आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं।

जिन पौधों को पानी की आवश्यकता कम होती है अपने घर में ऐसे पौधे लगाने चाहिए इन पौधों को पानी तो कम लगता है ही है और यह मिट्टी में पानी को सुरक्षित भी करके रखते हैं पानी के संरक्षण के साथ-साथ हमें सर्वधान पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

हम वर्षा के पानी का जल संरक्षण कर सकते हैं तथा उपयोग कर सकते हैं। इसलिए नदी, तालाबों और जलाशयों में उपलब्ध पानी को हमें बचाने और प्रदूषण मुक्त रखने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि यही हमारे लिए जल के मुख्य स्रोत हैं।

इसके साथ ही पानी के प्रदूषण को रोकने के उपायों पर अमल करना होगा। जल के जितने भी प्राकृतिक स्रोत जैसे नदी झरने हैं उन सभी में आज मानव निर्मित कचरा और प्रदूषण बढ़ाया जा रहा है जो कि हजारों लीटर पानी और वहां के वातावरण को प्रदूषित करते हैं इन्हें भी जल्द रोकने की आवश्यकता है।

जल ही जीवन है



तेहन कटार, डिजाइन एसोसिएट

परिचय

जल हमारे जीवन के लिए अनमोल है। यह पृथ्वी पर एकमात्र घटक है जिसके बिना मानव जीवन असंभव है। जल के बिना हम किसी भी चीज़ को नहीं कर सकते, वस्त्र धोना से लेकर संयंत्रों की संचालन तक। इसके साथ ही, जल वनस्पतियों के लिए भी आवश्यक है जो हमारे वातावरण को स्वस्थ रखती हैं।

जल हमारे जीवन का मूल आधार है और इसकी महत्वपूर्णता अविवादित है। हमारी पृथ्वी का लगभग 70% भाग पानी से ढंका हुआ है। जल हमारे शरीर का महत्वपूर्ण पेय तत्व है और हमारे सामान्य शरीर कार्यों के लिए जरूरी है। पीने के लिए उपयुक्त मात्रा में पानी हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमें ऊर्जा प्रदान करता है, शरीर की संरचना को बनाए रखता है और विभिन्न ऊर्जा कार्यों के लिए उपयोग होता है।



जल का संरक्षण

जल का महत्व वातावरण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जल स्रोतों के आधार पर हम वनस्पतियों को पाल सकते हैं जो वातावरण को संतुलित रखती हैं और ऑक्सीजन को उत्पन्न करती हैं। इसके अलावा, जल उपयोग विभिन्न उद्योगों के लिए आवश्यक है। विद्युत, जल ताप, केमिकल पदार्थों का उत्पादन और अन्य उद्योगों के लिए जल संयंत्रों की आवश्यकता होती है। जल संयंत्रों के बिना ये उद्योग नहीं चल सकते और इससे अर्थव्यवस्था पर असर पड़ता है। जल की उपयोगिता और महत्व के बावजूद, आज की दिनचर्या में जल संपादित करने के प्रयास के कारण, हमारे पास उचित मात्रा में पीने के पानी की उपलब्धता की समस्या है। वातावरणिक परिवर्तन, जल प्रदूषण, और सतत उपयोग के कारण हमारी जल संसाधनों की गुणवत्ता घटती जा रही है। जल की बचत और संरक्षण की जरूरत हमारी सबसे बड़ी

आवश्यकता बन गई है। हमें जल संचय की तकनीकों को अपनाना चाहिए, बारिश का पानी संग्रहीत करना चाहिए, और जल संयंत्रों के उपयोग में प्रदूषण को रोकना चाहिए। इसके अलावा, हमें जल संरचना को सुधारने, जल संचय के लिए तालाबों का निर्माण करने और जल संबंधी जागरूकता को बढ़ाने की आवश्यकता है।

हमें पानी की जरूरत जीवन भर है इसलिये इसको बचाने के लिये केवल हम ही जिम्मेदार हैं। संयुक्त राष्ट्र के संचालन के अनुसार, ऐसा पाया गया है कि राजस्थान में लड़कियाँ स्कूल

नहीं जाती हैं क्योंकि उन्हें पानी लाने के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है जो उनके पूरे दिन को खराब कर देती है इसलिये उन्हें किसी और काम के लिये समय नहीं मिलता है।

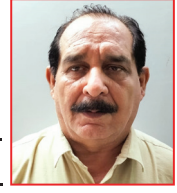
भारत के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, पानी की कमी के सभी समस्याओं के बारे में हमें अपने आपको जागरूक

रखना चाहिये जिससे हम सभी प्रतिज्ञा ले और जल संरक्षण के लिये एक-साथ आगे आये। ये सही कहा गया है कि सभी लोगों का छोटा प्रयास एक बड़ा परिणाम दे सकता है जैसे कि बूंद-बूंद करके तालाब, नदी और सागर बन सकता है।

निष्कर्ष

जल संरक्षण के लिये हमें अतिरिक्त प्रयास करने की जरूरत नहीं है, हमें केवल अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में कुछ सकारात्मक बदलाव करने की जरूरत है जैसे हर इस्तेमाल के बाद नल को ठीक से बंद करें, फव्वारे या पाईप के बजाय धोने या नहाने के लिये बाल्टी और मग का इस्तेमाल करें। लाखों लोगों का एक छोटा सा प्रयास जल संरक्षण अभियान की ओर एक बड़ा सकारात्मक परिणाम दे सकता है।

खेल का महत्त्व



प्रवीन ग्रोवर, सहायक लेखाकार

लोगों द्वारा आकस्मिक या संगठित भागीदारी के माध्यम से की जाने वाली प्रतिस्पर्धी खेल गतिविधियों को हम खेल कह सकते हैं। यह सभी की शारीरिक क्षमता और कौशल को सुधारने और बेहतर बनाए रखने में मदद करता है। यह प्रतिभागियों के लिए मनोरंजन का एक तरीका है। खेल वास्तव में सभी के द्वारा विशेषरूप से बच्चों द्वारा पसंद किए जाते हैं हालांकि, ये उनके लिए विभिन्न तरीकों से हानि भी पहुँचा सकते हैं। यह – खेल: चरित्र और स्वास्थ्य निर्माणबच्चों को आसानी से घायल कर सकता है या अध्ययन से भटका सकता है। फिर भी, बच्चे अपने मित्रों के साथ खेलने के लिए बाहर जाना पसंद करते हैं।

यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हम देखते हैं कि, खेलों को प्राचीन समय से ही बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। आधुनिक समय में, अन्य मनोरंजन बढ़ाने वाली चीजों, जैसे- विडियो गेम, टीवी आदि की वृद्धि और प्रसिद्धि के कारण जीवन में खेलों की माँग कम हो रही है। यद्यपि, यह भी सत्य है कि, खेल बहुत से देशों के द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों की तरह माने जाते हैं, इसलिए हम कह सकते हैं कि, भविष्य में खेल और स्पोर्ट्स का प्रचलन कभी खत्म नहीं होगा।

खेल गतिविधियों को स्कूल और कॉलेजों में विद्यार्थियों के अच्छे शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य और पेशेवर भविष्य के लिए अनिवार्य कर दिया गया है। खेल उन सभी के लिए, जो इनमें पूरी लगन के साथ शामिल होता के लिए भविष्य में अच्छा कैरियर रखते हैं। यह विशेषरूप से विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक है क्योंकि, यह शारीरिक और मानसिक विकास को सहायता

प्रदान करता है। वे लोग जो खेलों में अधिक रुचि रखते हैं और खेलने में अच्छे हैं, वे अधिक सक्रिय और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। वे कार्यस्थल पर बेहतर अनुशासन के साथ ही नेतृत्व के गुणों को विकसित कर सकते हैं।

यह माना जाता है कि, खेल और ताकत एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। यह सत्य है कि, खेल में भागीदारी करने वाले एक व्यक्ति के पास सामान्य व्यक्ति (जो व्यायाम नहीं करता हो) से अधिक ताकत होती है। खेलों में रुचि रखने वाला व्यक्ति महान शारीरिक ताकत विकसित कर सकता है और किसी भी राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खेल में भागीदारी करने के द्वारा अपना भविष्य उज्ज्वल कर सकता है। खेल प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने, शारीरिक समन्वय बनाए रखने, शरीर की ताकत को बढ़ाने और मानसिक शक्ति में सुधार करने में मदद करता है।

नियमित आधार पर खेल खेलना एक व्यक्ति के चरित्र और स्वास्थ्य निर्माण में मदद करता है। यह आमतौर पर देखा जा सकता है कि, युवा अवस्था से ही खेल में शामिल रहने वाला एक व्यक्ति, बहुत ही साफ और मजबूत चरित्र के साथ ही अच्छे स्वास्थ्य को विकसित करता है। खिलाड़ी बहुत अधिक समय के पाबंद और अनुशासित होते हैं, इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि, खेल राष्ट्र और समाज के लिए विभिन्न मजबूत और अच्छे नागरिक प्रदान करता है।

खेल आमतौर पर, एक दूसरे पर विजय प्राप्त करने की कोशिश के साथ दो प्रतिस्पर्धी टीमों के बीच एक प्रतियोगिता के रूप में खेला जाता है। खेल और स्पोर्ट्स के विभिन्न प्रकार होते हैं, जिन्हें हम घर के बाहर खेलते हैं उन्हें आउटडोर (मैदानी खेल) खेल कहते हैं, वहीं जो घर के अन्दर खेले जाते हैं उन्हें इनडोर खेल कहा जाता है। दोनों में से एक प्रतिभागी विजेता होता है, वहीं दूसरा हारता है। खेल वास्तव में सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण गतिविधि है, विशेषरूप से बच्चों और युवाओं के लिए क्योंकि यह शरीर को स्वस्थ और तंदरुस्त रखता है।



व्यायाम



केदार सिंह, केयरटेकर

व्यायाम एक स्वस्थ जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण घटक है। नियमित शारीरिक गतिविधि व्यापक स्वास्थ्य को सुधारने, मोटापा, हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह जैसी अविरल बीमारियों के जोखिम को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकती है। व्यायाम में भाग लेने से बेहतर नींद, बढ़ी हुई ऊर्जा स्तर और सुधारी गई ज्ञानात्मक क्षमता भी हो सकती है।

व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यायाम में भाग ले सकते हैं, जिसमें एरोबिक व्यायाम, शक्ति प्रशिक्षण और लचीलापन व्यायाम शामिल हैं। यह सुझाव दिया जाता है कि वयस्क सप्ताह में कम से कम 150 मिनट का मध्यम आवेश में एरोबिक व्यायाम या 75 मिनट तीव्र आवेश में एरोबिक व्यायाम के साथ हफ्ते में कम से कम दो दिन मांसपेशियों को मजबूत करने वाली गतिविधियों में शामिल हों।

अपनी दैनिक दिनचर्या में व्यायाम को शामिल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करने, आनंददायक गतिविधियों का खोज करने और व्यायाम को अपनी दैनिक दिनचर्या में निर्धारित करने जैसे कई तरीके होते हैं जिससे वह अधिक संचालनीय हो सकता है। व्यायाम को अपनी जीवनशैली का नियमित हिस्सा बनाने से, व्यक्ति नियमित शारीरिक गतिविधि के साथ आने वाले कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ हासिल कर सकते हैं।

व्यायाम एक स्वस्थ जीवन शैली का एक आवश्यक घटक है। यह शारीरिक गतिविधि है जो बहुत ज्यादा प्रयास की आवश्यकता

होती है, हमें पसीना बहाती है और हमारी मांसपेशियों को मजबूत करती है। नियमित शारीरिक गतिविधि सामान्य स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकती है, मोटापा, हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह जैसी अन्य अवस्थाओं के जोखिम को कम कर सकती है और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकती है। व्यायाम में लगने से बेहतर नींद, बढ़ी हुई ऊर्जा स्तर और सुधारित संज्ञानात्मक कार्य हो सकते हैं।

व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यायाम में भाग ले सकते हैं, जिसमें एरोबिक व्यायाम, शक्ति ट्रेनिंग और लचीलापन व्यायाम शामिल हैं। एरोबिक व्यायाम, जैसे दौड़ना, साइकलिंग या तैरना, हृदय दर और श्वसन दर बढ़ाते हैं, जो कार्डियोवास्कुलर स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करते हैं। शक्ति ट्रेनिंग व्यायाम, जैसे वेटलिफ्टिंग या रेजिस्टेंस बैंड वर्कआउट, मांसपेशियों को बनाने और मजबूत करने में मदद करते हैं। लचीलापन व्यायाम, जैसे योगा या स्ट्रेचिंग, गतिशीलता को सुधारने और चोट के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।

व्यायाम को अपनी जीवनशैली का नियमित हिस्सा बनाकर, व्यक्ति नियमित शारीरिक गतिविधि के साथ आने वाले कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों का लाभ उठा सकते हैं। व्यायाम हृदय स्वास्थ्य को सुधारने, अविरल रोगों के जोखिम को कम करने, नींद और ऊर्जा स्तर को सुधारने और संज्ञानात्मक कार्यक्षमता को सुधारने में मदद करता है। यह स्ट्रेस और चिंता को कम करने और सामान्य मूड को सुधारने में भी मदद करता है।



जल का महत्व

अभिषेक शुक्ला, प्रशासनिक सहायक



जल से ही जीवन का आरम्भ हुआ। जल ही जीवन का आधार है। मानव शरीर का 70% भाग जल से निर्मित है। पीने के अलावा, कई उद्देश्यों के लिए दैनिक जीवन में जल का उपयोग किया जाता है। दुनिया में सभी जीवों के लिए जल की आवश्यकता होती है। पानी सबसे महत्वपूर्ण पदार्थों में से एक है जो पौधों और जानवरों के लिए आवश्यक है। हम पानी के बिना अपने दैनिक जीवन का नेतृत्व नहीं कर सकते। पानी हमारे शरीर के आधे से अधिक वजन को बनाता है। पानी के बिना दुनिया के सभी जीव मर सकते हैं। पानी केवल पीने के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन के उद्देश्यों जैसे स्नान, खाना पकाने, सफाई और कपड़े धोने आदि के लिए भी आवश्यक है। यदि हम अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में बात करते हैं, तो पानी हमारे अस्तित्व की नींव है।

मानव शरीर को जीवित रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। हम पूरे एक

सप्ताह तक बिना किसी भोजन के जीवित रह सकते हैं, लेकिन पानी के बिना, हम 3 दिनों तक भी जीवित नहीं रह सकते हैं। इसके अलावा, हमारे शरीर में ही 70% पानी शामिल है। बदले में यह हमारे शरीर को सामान्य रूप से कार्य करने में मदद करता है। इस प्रकार, पर्याप्त पानी की कमी या दूषित पानी की खपत मनुष्यों के लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकती है। इसलिए, पानी की मात्रा और गुणवत्ता जो हम उपभोग करते हैं वह हमारे शारीरिक स्वास्थ्य और तंदरुस्ती के लिए आवश्यक है।

जल का उपयोग

दुनिया के हर जीव को जीने के लिए जल की आवश्यकता होती है। छोटे कीड़े से लेकर ब्लू व्हेल तक, पृथ्वी पर हर जीवन पानी

की उपस्थिति के कारण मौजूद है। पौधे को बढ़ने और ताजा रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। छोटी मछली से लेकर व्हेलमछली तक को पानी की आवश्यकता होती है, क्योंकि उसी से उनका अस्तित्व रहता है।

जल की शुद्धता और गुणवत्ता

वर्तमान समय में जल की गुणवत्ता को लेकर लोग सजग हो रहे हैं। लोग सरकार द्वारा प्रमाणित कंपनियों से ही पैकड वाटर खरीदते हैं। कई कंपनियां जल में मैग्नीशियम, मिनरल्स, आदि उपयोगी तत्वों को मिलाने का दावा करती हैं। सरकार के साथ ही साथ हमें भी जल की शुद्धता को लेकर सजग रहने की आवश्यकता है।

जल का संरक्षण

हमें जल को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। अगर आवश्यकता न हो तो जल का प्रयोग न करो। हम कई बार स्नान करने के लिए जल का अतिरिक्त उपयोग करते हैं, कई बार हम नल का टैप खुला छोड़ देते हैं।

अगर हम ऐसे ही जल का दुरुप्रयोग करते रहेंगे, तो एक दिन हम अपने अस्तित्व को ही खतरे में डाल देंगे।

उपसंहार

जल से ही समस्त संसार का जीवन है। हमें अपने स्वार्थ के लिए जल का प्रयोग न करके, भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए। हमें पानी बचाने के लिए संरक्षण कार्यक्रम करने की आवश्यकता है। हम पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। पीने और घरेलू उद्देश्यों के अलावा, पानी हमारी दुनिया के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। हमारी अच्छाई और आने वाले भविष्य के लिए जल का संरक्षण महत्वपूर्ण है। हमें पानी बचाने के लिए पहल करने की जरूरत है चाहे कमी हो या न हो।



शिक्षा का महत्व



तनु, सहायक अनुवादक

पढ़ाई का आज के जीवन में बहुत महत्व है, इसके सिर्फ फायदे ही फायदे हैं। पढ़ाई से ज्ञान मिलता है, जो इन्सान को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। शिक्षा का महत्व युगों युगों से चला आ रहा है। पहले लोग किसी महान महापुरुष के पास जाकर शिक्षा लिया करते थे, उनके आश्रम में रहकर हर प्रकार की शिक्षा लेते थे। फिर गुरुकुल भी बने, जहाँ वेद पुराण का ज्ञान दिया जाने लगा। अंग्रेजों के आने के पहले ऐसे ही शिक्षा दी जाती थी, उनके आने के बाद शिक्षा का रूप बदल गया। शिक्षा के लिए स्कूल बनाए गए, जहाँ सिर्फ पढ़ाई पर ध्यान दिया जाता था, दूसरी बातों का ज्ञान यहाँ नहीं मिलता था। शिक्षा के क्षेत्र में और तरक्की हुई, और सरकारी स्कूल के अलावा प्राइवेट स्कूल भी बनने लगे। बड़े बड़े कॉलेज का निर्माण हो गया, अलग अलग क्षेत्र की शिक्षा के लिए अलग अलग महाविद्यालय बन गए।

शिक्षित होना और साक्षर होना दोनों में अंतर होता है। साक्षरता का मतलब होता है कि आप पढ़ लिख सकते हैं। शिक्षा का मतलब है कि आप पढ़ लिख सकते हैं और इस शिक्षा का उपयोग आप अपने फायदे के लिए भी कर सकते हैं। अगर आप पढ़ना लिखना जानते हैं, लेकिन ये न समझे कि कैसे उपयोग करें, कैसे इसका उपयोग कर जीवन में आगे बढ़ें तो आपके साक्षर होने का क्या फायदा। साक्षर होना बस काफी नहीं है, आपको शिक्षित होना चाहिए। आजकल हर देश में वहाँ के नागरिक को साक्षर बनाने की बात पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन देश को आगे बढ़ाने के लिए नागरिक को साक्षर होने के साथ शिक्षित भी होना चाहिए। देश को ऐसे समूह की जरूरत नहीं है, जो सिर्फ पढ़ा लिखा हो, जबकि देश को ऐसे लोग चाहिए जो शिक्षा के बल पर जीवन में आगे बढ़ें। आजकल पढ़ा लिखा तो रोबोट भी होता है, तो इसका क्या मतलब वो शिक्षित है? रोबोट अपनी पढ़ाई का उपयोग खुद नहीं कर सकता, जितना उससे बोला जायेगा वो उतना ही करेगा। हमें रोबोट नहीं बनना है।

शिक्षा आज के समय में सबका मौलिक अधिकार बन गया है। लड़का हो या लड़की, या किसी भी जाति, धर्म, क्षेत्र का इन्सान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार रखता है। स्वामी विवेकानंद ने हमेशा शिक्षा पर जोर दिया, साथ ही उन्होंने लड़का लड़की को समान शिक्षा देने की बात भी कही। शिक्षा व शिक्षा का स्वरूप आज पूरी तरह से बदल गया है, खुले आसमान के नीचे लगने

वाली क्लास की जगह आज स्मार्ट क्लास ने ली है। छोटे छोटे एक भवन के स्कूल की जगह अंतर्राष्ट्रीय पब्लिक स्कूल ने ले ली है।

शिक्षा (पढ़ाई) के महत्व

1. एक खुशहाल जीवन के लिए – अगर आप एक खुशहाल, सुखी जीवन चाहते हैं, तो आपको शिक्षित होने की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा के बिना आप जीवन में सफल नहीं हो सकते हैं, शिक्षा से आपका भविष्य सुंदर व सुरक्षित होता है। शिक्षा अगर आपके पास है तो आप जीवन में कुछ भी हासिल कर सकते हैं, आपको किसी के सामने हाथ फ़ैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

2. आत्म निर्भर बनते हैं – अगर आप आत्म निर्भर स्वावलंबी बनना चाहते हैं तो शिक्षा बहुत जरूरी है। इससे आप अपने व अपने परिवार को संभाल सकते हैं, आपके अंदर बड़े से बड़े निर्णय लेने का आत्मविश्वास आता है।

3. आप अपने सपने को साकार कर सकते हैं – आपके जीवन में आपका सपना है एक सफल इन्सान बनने का, बड़ा अमीर बनने का, प्रसिद्ध बनने का, तो सपने साकार करने का एक ही मूलमंत्र है शिक्षा। हां खिलाड़ी इसमें एक अपवाद है, जो कम पढ़े लिखे होते हैं, लेकिन फिर भी सफल होते हैं। इन सब के बावजूद ज्यादातर केस में सफलता के लिए आपको डिग्री की जरूरत पड़ती है।

4. अच्छा नागरिक बनाता है – आप अगर शिक्षित हैं, तो देश के प्रति आप अपनी जिम्मेदारी समझेंगे और एक अच्छा नागरिक बनते हैं। शिक्षित व्यक्ति ही देश को आगे बढ़ाता है, वो सही व गलत में फर्क समझता है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने मौलिक, नैतिक व कानूनी अधिकार को समझता है। अशिक्षित लोग ही आगे बढ़ने के लिए, पैसा कमाने के लिए चोरी, डाका डालना, लूट मार करता है। शिक्षित व्यक्ति को सम्मान मिलता है – अगर आप शिक्षित हैं, तो आपको हर जगह सम्मान मिलेगा। आपकी बात का मान होगा और आपसे सलाह भी ली जाएगी। घर परिवार के अलावा आपको समाज व कार्यस्थल में भी सम्मान दिया जायेगा।

साक्षरता बढ़ाने हेतु सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदम

छोटे शहर व गाँव में रहने वालों के लिए सरकार द्वारा मुफ्त शिक्षा योजना कार्यक्रम शुरू किये जा रहे हैं।

इस तरह से आज देश और दुनिया में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक हो गया है। और उम्मीद है यह आगे भी बढ़ता जायेगा।

कुएं का पानी

पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक



एक किसान बहुत परेशान था। उसे अपने खेतों को सींचने के लिए पानी की जरूरत थी। इसलिए, वह कई दिनों से अपनी जमीन के आसपास किसी कुएं की तलाश कर रहा था। इसी तलाश में वह घूम ही रहा था कि अचानक उसे एक कुआं दिखा। यह कुआं उसके खेतों से बहुत नजदीक था। इसलिए, किसान बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि अब उसकी परेशानी खत्म हो गई। यह सोचकर वह खुशी-खुशी घर चला गया।

अगले दिन वह पानी लेने कुएं पर पहुंचा। जैसे ही उसने कुएं के नजदीक रखी बाल्टी कुएं में डाली, वहां एक आदमी आ धमका। वह किसान से बोला, यह कुआं मेरा है। तुम इससे पानी नहीं ले सकते। अगर तुम इस कुएं से पानी लेना चाहते हो, तो तुम्हें इस कुएं को खरीदना होगा। यह बात सुनकर किसान कुछ देर रुका और फिर मन ही मन सोचने लगा कि अगर मैं इस कुएं को खरीद लूं, तो मुझे कभी पानी की कमी नहीं होगी और न ही मुझे पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ेगा। फिर क्या था, दोनों के बीच

एक रकम तय हुई। किसान के पास उतने पैसे तो थे नहीं, लेकिन वह यह मौका छोड़ना नहीं चाहता था। इसलिए, किसान ने उस आदमी को अगले दिन वह रकम देने का वादा किया और घर की ओर चल दिया।

किसान के लिए कुआं खरीदने का यह अच्छा मौका था। इसलिए, वह इस काम में जरा भी देर नहीं करना चाहता था। घर पहुंचते ही उसने अपने करीबियों और दोस्तों से इस बारे में बात की और कुएं के लिए तय हुई रकम का इंतजाम करने में जुट गया। थोड़ी भागदौड़ और कोशिश के बाद आखिरकार उसने वह रकम जमा कर ली। अब वह पूरी तरह से निश्चिंत हो चुका था कि उसे कुआं खरीदने से कोई नहीं रोक सकता। जमा हुए पैसे को लेकर वह फिर घर चल दिया। उसे बड़ी बेसब्री से इंतजार था कि कब रात खत्म होगी और वह कुआं खरीदने जाएगा। इसी सोच में वह पूरी रात सो नहीं सका। अगले दिन सुबह होते ही वह कुआं खरीदने निकल पड़ा।



उस आदमी के घर पहुंच किसान ने उसके हाथ पर पैसे रखे और कुएं को खरीद लिया। अब तो कुआं किसान का हो गया था तो फिर उसने पानी निकालने में देर नहीं की। जैसे ही किसान ने कुएं से पानी निकालने के लिए बाल्टी उठाई, उस आदमी ने फिर बोला ठहरो, तुम इस कुएं से पानी नहीं निकाल सकते हो। मैंने तुम्हें कुआं बेचा है, कुएं का पानी अभी भी मेरा है। किसान मायूस हो गया और न्याय के लिए बादशाह के दरबार में शिकायत करने पहुंच गया। मालूम है उस बादशाह का नाम क्या था? बादशाह अकबर। बादशाह अकबर ने उस किसान की पूरी कहानी सुनी और फिर उस आदमी को दरबार में बुलाया, जिसने वह कुआं बेचा था। बादशाह का फरमान सुनते ही वह आदमी भागा-भागा दरबार में हाजिर हो गया। बादशाह ने उससे पूछा, जब तुमने इस किसान को अपना कुआं बेच दिया, तो फिर इसे पानी क्यों नहीं लेने दे रहे हो।

आदमी बोला, महाराज मैंने इसे केवल कुआं बेचा था, पानी नहीं। यह बात सुनकर बादशाह भी सोच में पड़ गए। उन्होंने कहा कि बात तो यह पते की कह रहा है, कुआं बेचा है, पानी तो नहीं। काफी देर सोचने के बाद जब इस समस्या को सुलझाने में वह नाकाम हो गए, दरबारी बीरबल को बुलाया। बीरबल बहुत ही बुद्धिमान था। इसलिए, बादशाह अकबर किसी भी मामले पर फैसला लेने से पहले उनकी राय जरूर लेते थे। बीरबल ने एक बार

फिर दोनों से उनकी समस्या पूछी। पूरी बात जानने के बाद बीरबल ने उस आदमी से कहा ठीक है, तुमने कुआं बेचा पानी नहीं। फिर तुम्हारा पानी किसान के कुएं में क्या कर रहा है? कुआं तुम्हारा नहीं है, फौरन अपने पानी को कुएं से बाहर निकालो। बीरबल का इतना कहते ही, उस आदमी को समझ आ गया कि अब उसकी चालाकी किसी काम नहीं आने वाली। उसने बादशाह से फौरन माफी मांगी और माना कि कुएं के साथ उसके पानी पर भी किसान का पूरा अधिकार है।

यह देखकर बादशाह अकबर ने बीरबल की बुद्धिमानी की तारीफ की और कुआं बेचने वाले आदमी पर धोखेबाजी के लिए जुर्माना लगाया।

कहानी से सीख

किसान और कुएं की कहानी से पता चलता है कि अपने आपको दूसरे से अधिक चालाक नहीं समझना चाहिए। साथ ही धोखा देने की आदत से भी दूर रहना चाहिए, क्योंकि कोई ऐसा भी हो सकता है, जो आपसे भी अधिक बुद्धि का इस्तेमाल करना जानता हो। ऐसे में आपका धोखा पकड़ा जाएगा और आपको अपने किए का भुगतान करना होगा, जैसे इस कहानी के अंत में कुआं बेचने वाले आदमी को करना पड़ा।



अच्छे इंसान के साथ हमेशा अच्छा होता है।



मौ. शाकिब, हिंदी टंकक

प्राचीन काल की बात है, एक शेरसिंह नाम का राजा हुआ करता था। वह बहुत ही अच्छा इंसान था वह हमेशा दूसरों की मदद किया करता था। उसे अपनी प्रजा से बहुत प्रेम था, वह सभी की सहायता किया करता था। उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति असंतुष्ट नहीं था, किसी को भी किसी चीज की कमी नहीं थी। उसके राज्य में भरपूर पैसा था और साथ ही खेत खलिहान भी भरे हुए थे लोग बहुत ही अच्छे से जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस राजा से जो भी व्यक्ति मदद की गुहार करता या अपने निजी काम के लिए धन की मांग करता था तो वह उसकी पूर्ति कर दिया करता था। इस बात से उनके ही दरबार के एक दरबारी जिसका नाम करीम था उसने सोचा कि –“राजा बहुत ही दयालु है क्यों ना इसका फ़ायदा उठाया जाए”।

उसने उस राजा का बहुत ही खास और भरोसेमंद दरबारी बनने का सोचा, जिससे राजा उसे अपने खजाने की रखवाली के लिए तैनात कर दें। इसके लिए उसने एक योजना बनाई, वह राजा के आस – पास ही रहा करता था।

राजा शेरसिंह जो भी काम करने को बोलते वह झट से कर दिया करता था, और राजा के साथ वह हर जगह जाकर उनकी मदद भी किया करता था। राजा ने एक बार उससे किसी व्यापारी के यहाँ से आये धन को तहखाने में रखने के लिए कहा और करीम ने बड़ी ही इमानदारी से सारा का सारा धन तहखाने में रख दिया। राजा ने यह सब देख कर सोचा कि – “करीम मेरी हर जगह मदद करता है और साथ ही जो भी काम मैं उसे करने देता हूँ वह बहुत ही ईमानदारी से करता है” राजा करीम से बहुत ही प्रभावित होने लगे थे। करीम को भी लगने लगा कि राजा उससे प्रभावित हो चुके हैं, यही उसकी योजना थी कि ऐसा करने से राजा उसे जल्द ही अपने खजाने का रखवाला बना देंगे।

राजा ने करीम को बुलवाया। करीम मन ही मन बहुत खुश हो रहा था कि अब बस राजा उसे अपने खजाने का रखवाला बनाने की बोलने ही वाले हैं, यह सोचते – सोचते वह राजा के पास पहुंचा। राजा ने उससे कहा – “करीम तुम अपने काम में बहुत ही इमानदार हो, मैं तुमसे बहुत प्रभावित हुआ हूँ और मैं तुम्हें अपने खजाने की रखवाली करने के लिए तैनात करता हूँ”। यह सुनकर करीम खुशी से फूला नहीं समा रहा था, उसने यह स्वीकार कर लिया और वह खजाने का रखवाला बन गया। रखवाला बनने के बाद कुछ समय तक उसने अपना काम बहुत ही इमानदारी से किया, जिससे राजा को उस पर और भी ज्यादा भरोसा हो जाए फिर उसके बाद उसने खजाने में घोटाला करना शुरू कर दिया। एक के बाद एक घोटाले

करता चला गया, जिससे खजाने में बहुत ज्यादा नुकसान होने लगा था, किन्तु राजा को करीम पर पूरा भरोसा था। उसे लगा कि कोई और है जो उसके खजाने में घोटाला कर रहा है।

उसने अपने सैनिकों से इस घोटाले के बारे में पता लगाने को कहा। सभी लोग उस घोटाले करने वाले आदमी को खोजने लगे। फिर खोजते – खोजते कुछ दिनों बाद यह पता चला कि यह सब घोटाला कोई और नहीं बल्कि करीम ही कर रहा था। राजा ने करीम को दरबार में बुलाया और उसे कहा –“तुम बहुत ही बेईमान निकले, और तुमने मेरा भरोसा तोड़ा है तुम्हें दंड अवश्य दिया जायेगा”। ऐसा कहकर राजा ने उसे महल से निकाल दिया। महल से निकाले जाने के बाद करीम ने सोचा कि “अब मुझे कोई काम नहीं मिलेगा और यह सब राजा की वजह से हुआ है मैं राजा को मार दूंगा”।

ऐसा सोचते हुए उसने राजा को मारने की योजना बनाई। वह चुपके से छिपते हुए महल के अन्दर घुस गया और किसी तरह वह महल के रसोई घर में पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने राजा के खाने में जहर मिला दिया जिससे राजा की मृत्यु हो जाए, किन्तु राजा बहुत ही दयालु और अच्छा इंसान था। उसने यह खाना गरीबों में बाँटे जाने का एलान कर दिया। करीम यह सुनकर डर गया उसे लगने लगा कि –“मैं तो राजा को मारना चाहता हूँ, लेकिन ये क्या ये खाना मासूम और गरीब लोगों को खिलाया जाने वाला है। किन्तु मैं उन सब की मृत्यु नहीं होने दे सकता हूँ”। तब वह राजा के पास गया और उनसे कहने लगा कि –“ हे राजन ! यह खाना गरीबों में मत बाँटिये इसमें जहर मिला है, मुझे क्षमा कर दीजिये मैं लालच में आने के कारण यह गलत कदम उठा बैठा”। इस तरह राजा के अच्छे स्वभाव के कारण उनकी जान भी बच गई और करीम भी उनके इस आचरण से बहुत प्रभावित हुआ और उसने राजा के दिखाए गए रास्ते पर चलने का फैसला किया साथ ही वह भी एक अच्छा इंसान बन गया।

शिक्षा

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि जिस तरह राजा शेरसिंह दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करके एक अच्छा इंसान बन गया और उसकी जान भी बच गई, उसी तरह हमें भी दूसरों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करना चाहिए ताकि हमारे साथ भी हमेशा अच्छा हो। आज के समय में लोगों को अपने आप से ही फुरसत नहीं मिलती वे दूसरों के बारे में क्या सोचेंगे किन्तु हमें यह सोच बदलनी होगी तभी हम एक अच्छे इंसान बन सकेंगे और हमारे साथ हमेशा अच्छा होगा।

अहंकार की सजा



तनु, सहायक अनुवादक

एक बहुत ही घना जंगल था। उस जंगल में एक आम और एक पीपल का भी पेड़ था। एक बार मधुमक्खी का झुण्ड उस जंगल में रहने आया, लेकिन उन मधुमक्खी के झुण्ड को रहने के लिए एक घना पेड़ चाहिए था।

रानी मधुमक्खी की नजर एक पीपल के पेड़ पर पड़ी तो रानी मधुमक्खी ने पीपल के पेड़ से कहा- हे पीपल भाई, क्या मैं आपके इस घने पेड़ की एक शाखा पर अपने परिवार का छत्ता बना लूं?

पीपल को कोई परेशान करे यह पीपल को पसंद नहीं था। अहंकार के कारण पीपल ने रानी मधुमक्खी से गुस्से में कहा- हटो यहाँ से, जाकर कहीं और अपना छत्ता बना लो। मुझे परेशान मत करो।

पीपल की बात सुन कर पास ही खड़े आम के पेड़ ने कहा- पीपल भाई बना लेने दो छत्ता। ये तुम्हारी शाखाओं में सुरक्षित रहेंगी।

पीपल ने आम से कहा- तुम अपना काम करो, इतनी ही चिन्ता है तो तुम ही अपनी शाखा पर छत्ता बनाने के लिए क्यों नहीं कह देते?

इस बात से आम के पेड़ ने मधुमक्खी रानी से कहा- हे रानी मक्खी, अगर तुम चाहो तो तुम मेरी शाखा पर अपना छत्ता बना लो।

इस पर रानी मधुमक्खी ने आम के पेड़ का आभार व्यक्त किया और अपना छत्ता आम के पेड़ पर बना लिया।

समय बीतता गया और कुछ दिनों बाद जंगल में कुछ लकड़हारे आए। उन लोग को आम का पेड़ दिखाई दिया और वे आपस में बात करने लगे कि इस आम के पेड़ को काट कर लकड़िया ले लिया जाये।

वे लोग अपने औजार लेकर आम के पेड़ को काटने चले, तभी एक व्यक्ति ने ऊपर की ओर देखा तो उसने दूसरे से कहा- नहीं, इसे मत काटो। इस पेड़ पर तो मधुमक्खी का छत्ता है, कहीं ये उड़ गई तो हमारा बचना मुश्किल हो जायेगा।

उसी समय एक आदमी ने कहा- क्यों न हम लोगों को ये पीपल का पेड़ ही काट लिया जाए। इसमें हमें ज्यादा लकड़ियां भी मिल जायेगी और हमें कोई खतरा भी नहीं होगा।

वे लोग मिल कर पीपल के पेड़ को काटने लगे। पीपल का पेड़ दर्द के कारण जोर-जोर से चिल्लाने लगा, बचाओ-बचाओ-बचाओ...

आम को पीपल की चिल्लाने की आवाज आई, तो उसने देखा कि कुछ लोग मिल कर उसे काट रहे हैं।

आम के पेड़ ने मधुमक्खी से कहा- हमें पीपल के प्राण बचाने चाहिए... आम के पेड़ ने मधुमक्खी से पीपल के पेड़ के प्राण बचाने का आग्रह किया तो मधुमक्खी ने उन लोगों पर हमला कर दिया और वे लोग अपनी जान बचा कर जंगल से भाग गए।

पीपल के पेड़ ने मधुमक्खियों को धन्यवाद दिया और अपने आचरण के लिए क्षमा मांगी।

तब मधुमक्खियों ने कहा- धन्यवाद हमें नहीं, आम के पेड़ को दो जिन्होंने आपकी जान बचाई है, क्योंकि हमें तो इन्होंने कहा था कि अगर कोई बुरा करता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम भी वैसा ही करें।

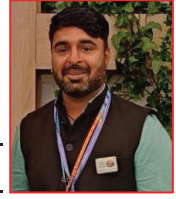
अब पीपल को अपने किये पर पछतावा हो रहा था और उसका अहंकार भी टूट चुका था। पीपल के पेड़ को उसके अहंकार की सजा भी मिल चुकी थी।

शिक्षा:- हमें कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। जितना हो सके, लोगों के काम ही आना चाहिए, जिससे वक्त पड़ने पर तुम भी किसी से मदद मांग सको। जब हम किसी की मदद करेंगे तब ही कोई हमारी भी मदद करेगा।

सदैव प्रसन्न रहिये - जो प्राप्त है, पर्याप्त है।

जिसका मन मस्त है - उसके पास समस्त है।।

पंडित जी और खान साहब



योगेश भट्ट, लेखाकार

शाम ढलने को थी। सभी आगंतुक धीरे-धीरे अपने घरों को लौटने लगे थे। तभी खान साहब ने देखा कि एक मोटा-सा आदमी शरमाता हुआ चुपचाप एक कोने में खड़ा है। खान साहब उसके निकट आता हुआ बोला, “लगता है तुम कुछ कहना चाहते हो। बेहिचक कह डालो जो कहना है। मुझे बताओ, तुम्हारी क्या समस्या है?”

वह मोटा व्यक्ति सकुचाता हुआ बोला, “मेरी समस्या यह है कि मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। मैंने अपनी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जिसका मुझे खेद है। मैं भी समाज में सिर उठाकर सम्मान से जीना चाहता हूँ। पर अब नहीं लगता है ऐसा कभी नहीं हो पाएगा।”

“नहीं कोई देर नहीं, ऐसा जरूर होगा यदि तुम हिम्मत न हारो और परिश्रम करो। तुममें भी योग्यता है।” खान साहब ने कहा। “लेकिन ज्ञान पाने में तो सालों लग जाएंगे।” मोटे आदमी ने कहा, “मैं इतना इंतजार नहीं कर सकता। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि क्या कोई ऐसा तरीका है कि चुटकी बजाते ही प्रसिद्धि मिल जाए।” प्रसिद्धि पाने का ऐसा आसान रास्ता तो कोई नहीं है।” खान साहब बोला, “यदि तम वास्तव में योग्य और प्रसिद्धि कहलवाना चाहते हो, तो

मेहनत तो करनी ही होगी। वह भी कुछ समय के लिए।” यह सुनकर मोटा आदमी सोच में डूब गया। “नहीं मुझमें इतना धैर्य नहीं है।” मोटे आदमी ने कहा, “मैं तो तुरंत ही प्रसिद्धि पाकर ‘पंडित जी’ कहलवाना चाहता हूँ।”

“ठीक है।” खान साहब बोला, “इसके लिए तो एक ही उपाय है। कल तुम बाजार में जाकर खड़े हो जाना। मेरे भेजे आदमी वहां होंगे, जो तुम्हें पंडित जी कहकर पुकारेंगे। वे बार-बार जोर-जोर से ऐसा कहेंगे। इससे दूसरे लोगों का ध्यान इस ओर जाएगा, वे भी तुम्हें पंडित जी कहना शुरू कर देंगे। ऐसा होना स्वाभाविक भी है। लेकिन हमारा नाटक तभी सफल होगा जब तुम गुस्सा दिखाते हुए उन पर पत्थर फेंकने लगोगे या हाथ में लाठी लेकर उनको दौड़ाना होगा तुम्हें। लेकिन सतर्क रहना, गुस्से का सिर्फ दिखावा भर करना है तुम्हें। किसी को चोट नहीं पहुंचनी चाहिए।” उस समय तो वह मोटा आदमी कुछ समझ नहीं पाया और घर लौट गया।

अगली सुबह वह मोटा आदमी खान साहब के कहेनुसार व्यस्त बाजार में जाकर खड़ा हो गया। तभी खान साहब के भेजे आदमी वहां आ पहुंचे और तेज स्वर में कहने लगे- “पंडितजी।”



मोटे आदमी ने यह सुन अपनी लाठी उठाई और भाग पड़ा उन आदमियों के पीछे जैसे सच ही में पिटाई कर देगा। खान साहब के भेजे आदमी वहां से भाग निकले, लेकिन पंडितजी...पंडितजी... का राग अलापना उन्होंने नहीं छोड़ा। कुछ ही देर बाद आवारा लड़कों का वहां घूमता समूह 'पंडितजी...पंडितजी...' चिल्लाता हुआ उस मोटे आदमी के पास आ धमका।

बड़ा मजेदार दृश्य उपस्थित हो गया था। मोटा आदमी लोगों के पीछे दौड़ रहा था और लोग 'पंडितजी...पंडितजी...' कहते हुए नाच-गाकर चिल्ला रहे थे। अब मोटा आदमी पंडितजी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। जब भी लोग उसे देखते तो पंडितजी कहकर ही संबोधित करते। अपनी ओर से तो लोग यह कहकर उसका मजाक उड़ाते थे कि वह उन पर पत्थर फेंकेगा या लाठी लेकर उनके पीछे दौड़ेगा। लेकिन उन्हें क्या पता था कि मोटा तो चाहता ही यही था। वह प्रसिद्ध तो होने ही लगा था।

इसी तरह महीनों बीत गए। मोटा आदमी भी थक चुका था। वह यह भी समझ गया था कि लोग उसे सम्मानवश पंडितजी नहीं कहते, बल्कि ऐसा कहकर तो वे उसका उपहास करते हैं। लोग जान गए थे कि पंडित कहने से उसे गुस्सा आ जाता है। वह सोचता था कि शायद लोग मुझे पागल समझते हैं। यह सोचकर वह इतना परेशान हो गया कि फिर से खान साहब के पास जा पहुंचा।

वह बोला, "मैं मात्र पंडितजी कहलाना नहीं चाहता। वैसे मुझे स्वयं को पंडित कहलवाना पसंद है और कुछ समय तक यह सुनना मुझे अच्छा भी लगा। लेकिन अब मैं थक चुका हूँ। लोग मेरा सम्मान नहीं करते, वो तो मेरा मजाक उड़ाते हैं।"

मोटे आदमी को वास्तविकता का आभास होने लगा था। मोटे आदमी को यह कहता देख खान साहब हंसता हुआ यह बोला, "मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुम बहुत समय तक ऐसा नहीं कर पाओगे। लोग तुम्हें वह सब कैसे कह सकते हैं, जो तुम ही नहीं। क्या तुम उन्हें मूर्ख समझते हो? जाओ, अब कुछ समय किसी दूसरे शहर में जाकर बिताओ। जब लौटो तो उन लोगों को नजरअंदाज कर देना जो तुम्हें पंडितजी कहकर पुकारें। एक अच्छे, सभ्य व्यक्ति की तरह आचरण करना। शीघ्र ही लोग समझ जाएंगे कि 'पंडितजी' कहकर तुम्हारा उपहास करने में कुछ नहीं रक्खा और वे ऐसा कहना छोड़ देंगे।"

मोटे आदमी ने खान साहब के निर्देश पर अमल किया। जब वह कुछ माह बाद दूसरे शहर से लौटकर आया तो लोगों ने उसे पंडितजी कहकर परेशान करना चाहा, लेकिन उसने कोई ध्यान न दिया। अब वह मोटा आदमी खुश था कि लोग उसे उसके असली नाम से जानने लगे हैं। वह समझ गया था कि प्रसिद्धि पाने की सरल राह कोई नहीं है।



दोस्ती का महत्व



केदार सिंह, केयरटेकर

ज्ञानचंद और गुरदीप दोनों मित्र थे, वे अम्बाला में रहते थे। दोनों सातवीं कक्षा के छात्र थे। वे पढ़ने में तो होशियार थे, साथ ही साथ अच्छे स्काउट भी थे। दोनों ही अपने दल के नायक थे। उनके स्काउट-मास्टर बड़े योग्य और साहसी व्यक्ति थे। वे बच्चों को खेल-खेल में ही बहुत-सी बातें सिखा देते। उन्होंने स्काउटों में सेवा, परोपकार और साहस की भावनाएं कूट-कूटकर भर दी थी, बच्चे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। शिक्षक उन्हें ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उनके चरित्र का निर्माण करता है, उन्हें सद्गुणी बनाता है।

एक दिन ज्ञान और गुरदीप स्कूल से लौट रहे थे, उनका घर भी बस्ती से बाहर बनी नई कालोनी में था। वहां चहल-पहल वैसे भी कम रहती थी। उस दिन लू भी चल रही थी। सड़क प्रायः सुनसान

-सी थी। ज्ञानचंद और गुरदीप दोनों बातें करते हुए जा रहे थे। एक दिन बाद ही उनका स्काउटिंग का कैम्प लगने वाला था। वे उसी के लगने की बातें कर रहे थे।

बच्चों की आदत होती है कि सड़क पर बात करते हुए चलते हैं तो बातों में डूबकर सब कुछ ही भूल जाते हैं। अधिकांश दुर्घटनाएं इसी प्रकार होती हैं। कोई स्कूटर की चपेट में आ जाता है तो कोई ट्रक की। कोई किसी से टकरा जाता है तो कोई ठोकर खाकर गिर जाता है, परन्तु ज्ञान और गुरदीप की ऐसी आदत न थी। वे तो स्काउट थे, हर समय सावधान रहने वाले।

ज्ञानचंद को थोड़ी देर से लग रहा था कि कोई उनका पीछा कर रहा है। अतएव बातें करते हुए भी वह चौकन्नी निगाह रख रहा था।



उसकी आशंका गलत न निकली। सहसा ही एक व्यक्ति ने पास आकर पीछे से गुरदीप के मुँह पर कपड़ा डाला और उसे घसीटकर ले जाना चाहा। ज्ञानचंद सहसा पीछे मुड़ा। वैसी भयंकर स्थिति देखकर वह तनिक भी नहीं घबराया। उसने सूझबूझ से काम लिया उस व्यक्ति को धक्का देकर वह भागता ही चला गया। वह पूरी शक्ति से चिल्लाता जा रहा था — “बचाओ बचाओ।”

भागते हुए भी ज्ञान की निगाह उस व्यक्ति पर थी। उसने देखा कि उस आदमी ने अब गुरदीप के चेहरे पर डाला हुआ कपड़ा कस लिया है। उसे बोरे में डालकर, पीठ पर लादकर वह दूसरी दिशा में भागने लगा। यह देखकर ज्ञान ने भी अपनी दिशा बदल दी। अब वह लुटेरे के पीछे चिल्लाता हुआ भागा।

ज्ञान की चीख आसपास के घरों में बैठे व्यक्तियों ने सुनी। वे अपने घरों से बाहर निकल आए। दूर सड़क पर एक-दो राहगीर जा रहे थे वे भी ठिठक कर खड़े हो गए। ज्ञान ऊँगली से इशारा करते हुए लगातार भाग रहा था, चीख रहा था — “लुटेरा-बचाओ।” दूसरे व्यक्ति भी ज्ञान के पीछे-पीछे भागे। ज्ञान ने तेजी से जाकर उस व्यक्ति की कमीज पीछे से पकड़ ली, तब तक अन्य व्यक्ति भी वहाँ पहुँच चुके थे। सभी ने उसे घेर लिया।

गुरदीप ने लुटेरे की पकड़ से छूटने के लिए बहुत प्रयास किया, पर उस लम्बे-चौड़े आदमी ने उसे दबोच लिया था। चेहरे पर मोटा कपड़ा पड़ा होने के कारण गुरदीप को सामने का कुछ दिखलाई न दे रहा था। दुष्ट व्यक्ति ने इसका लाभ उठाकर गुरदीप की गर्दन में फंदा कसकर उसे बोरे में डाल दिया था। फंदा कस जाने के कारण वह बेहोश हो गया था।

ज्ञान जल्दी से बोरे की ओर बढ़ा और उसका मुँह खोला। उसने कुछ व्यक्तियों की सहायता लेकर बेहोश गुरदीप को बोरे से बाहर निकाला।

“मेरा घर पास ही है, चलो वहाँ ले चलें।” कहकर एक व्यक्ति ने गुरदीप को अपने कंधे पर लटकाया और चल पड़ा। अब ज्ञानचंद भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा। साथी को छुड़ाने और लुटेरे को पकड़वाने का काम पूरा हो चुका था। जिन व्यक्तियों ने उस बच्चों को चुराने वाले चोर को पकड़ा था वे अब उसकी अच्छी तरह धुनाई कर रहे थे।

ज्ञान और उस व्यक्ति ने घर आकर गुरदीप को लिटा दिया। उसके मुँह पर पानी डाला और उसे कृत्रिम सांस दी। जल्दी ही उसे होश आ गया। “कहाँ हूँ मैं? क्या हुआ मुझे? कहाँ गया आदमी?” कहते हुए आँखें मलकर गुरदीप उठ बैठा।

“घबराओ नहीं, तुम बिलकुल सुरक्षित हो बेटे।” गृहस्वामी ने गुरदीप के सर पर हाथ फिराते हुए कहा। ज्ञानचंद ने उस लुटेरे के पकड़े जाने की वह पूरी घटना बताई। “ओह!” तो आज तुमने साहसपूर्वक स्वयं को खतरे में डालकर मेरी रक्षा की है। गुरदीप कहने लगा।

“वह तो मेरा कर्तव्य था, मुझे करना ही चाहिए था। भगवान मेरी यह भावना और शक्ति बनाए रखें।” ज्ञान बोला।

गृहस्वामी उन दोनों बच्चों की बातचीत से मन ही मन बड़े प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने नास्ता-पानी कराया और उनके घर छोड़ आए। उधर उस लुटेरे को पकड़कर व्यक्ति थाने ले गए। थानेदार ने बताया कि यह एक कुख्यात अपराधी है। बच्चों को चुराना और बेचना ही प्रायः उसका काम है। पुलिस को भी उसकी काफी तलाश थी। सिपाहियों ने उसकी बहुत पिटाई की और धक्का देकर कोठरी में बंद कर दिया।

आपने कहाँ से पकड़ा इसे? थानेदार ने साथ आए व्यक्तियों से पूछा और सारी बात जाननी चाही। जब उन्हें पता लगा कि एक छोटे बच्चे की बहादुरी से वह अपराधी पकड़ा गया है, तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए। उस बच्चे से मिलने वे उसके घर पहुँचे। उन्होंने ज्ञानचंद की पीठ थपथपाई, उसे बहुत शाबासी दी और कहा— “बेटे! तुम्हारे जैसे साहसी बालक ही समाज का गौरव है। सदा ऐसे ही बहादुरी के काम करो।”

कुछ दिनों बाद एक सार्वजनिक समारोह में नगर के मुख्य पुलिस अधीक्षक ने ज्ञानचंद को वीरता पुरस्कार दिया और उसका अभिनन्दन किया। यही नहीं, वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाले बच्चों के नामों के लिए ज्ञानचंद का नाम प्रस्तावित किया गया। प्रधानमंत्री द्वारा ज्ञानचंद को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। वह मन ही मन संकल्प कर रहा था — “मैं सदैव बुराई, अनीति और अत्याचार से संघर्ष करूँगा। समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए मेरा जीवन समर्पित रहेगा।”

किसान की समस्या



प्रवीन ग़ोवर, सहायक लेखाकार

सालों पहले गुमथा गांव में रहने वाला एक किसान काफी दुखी था। वो अपनी जीवन की छोटी-छोटी परेशानियों को लेकर उदास रहता था और अपने दुख के बारे में लोगों को बताता फिरता था। एक दिन उसे किसी ने सलाह दी कि तुम गौतम बुद्ध के पास चले जाओ, वे तुम्हारी समस्याओं का कोई-न-कोई हल जरूर निकल देंगे। उस व्यक्ति की बात सुनते ही दूसरे दिन वो किसान सीधे महात्मा बुद्ध के पास पहुंच गया। गौतम बुद्ध के पास पहुंचकर उन्हें प्रणाम करते हुए उसने बताया कि मैं एक किसान हूँ और मैं खेती करके जीवनयापन करता हूँ। मैं यहाँ अपनी समस्याओं का समाधान लेने के लिए आया हूँ। दरअसल, कई बार हमारी फसल अच्छी होती है, तो कभी बिल्कुल भी नहीं होती। इससे मैं बहुत परेशान हो जाता हूँ।

इतना कहने के बाद किसान ने आगे कहा कि मेरी पत्नी है और वो मुझसे बेहद प्रेम करती है, पर कभी-कभी वो मुझे बहुत परेशान करती है। उससे मैं तंग आ गया हूँ और कभी-कभी लगता है कि अगर वो मेरे जीवन में नहीं आती, तो मैं कितने अच्छे से रहता। इस तरह वह अपनी सारी परेशानियाँ महात्मा बुद्ध को सुनाता रहा और वो उसकी बातें सुनते रहे। जबतक किसान बात कर रहा था, तब

तक गौतम बुद्ध एक शब्द भी नहीं बोले। वो बस ध्यान से किसान की ही बातें सुन रहे थे।

परेशानी बताते हुए किसान बोलता है कि मेरा एक बच्चा भी है। वो है तो काफी अच्छा, पर कई बार मुझे परेशान करता है और मेरा कहना नहीं मानता। उसके ऐसे व्यवहार से मुझे लगता है कि वो मेरा बच्चा नहीं है। ऐसा कहते हुए किसान अपनी सारी परेशानी को बताता गया। इस तरह किसान ने अपने जीवन का सबकुछ, जो उसे सताता था और दुखी करता था, वो गौतम बुद्ध को बता दिया। अब किसान के पास उन्हें बताने के लिए कुछ भी नहीं बचा और उसका मन काफी हल्का हो गया। महात्मा बुद्ध से सबकुछ कहने के बाद वो उनसे अपनी परेशानियों के समाधान की उम्मीद लगाए बैठा था। काफी देर तक गौतम बुद्ध के जवाब का इंतजार करने के बाद बेसब्र होकर किसान ने ऊंची आवाज में महात्मा बुद्ध से पूछा, 'क्या आप मेरी समस्याओं को लेकर कुछ नहीं कहेंगे?'

तब गौतम बुद्ध बोले, ' मैं तुम्हारी किसी तरह से भी मदद नहीं कर सकता।' किसान ने महात्मा बुद्ध से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं की थी। वो उनका जवाब सुनकर हैरान हो गया। उसे अपने कानों



पर भरोसा नहीं हो रहा था। उसने भगवान बुद्ध से पूछा कि ये आप क्या बोल रहे हैं? क्या आप मेरी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते? मैंने सुना है कि आप सभी की समस्याओं का समाधान करते हैं, तो मेरी समस्याओं का क्यों नहीं करेंगे?

महात्मा बुद्ध इस बात पर किसान से कहते हैं कि आपके जीवन में जितनी कठिनाइयां हैं, उतनी हर किसी के जीवन में होती है और सबको अपनी छोटी समस्याएं भी बड़ी लगती हैं। आपके जीवन में कोई ऐसी समस्या नहीं है, जो दूसरों को न हो। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सुख-दुख का सामना करना पड़ता है। हम चाहें जितनी भी कोशिश कर लें, लेकिन हमारे जीवन में सुख और दुख दोनों आएंगे-ही-आएंगे। कई बार हमारे अपने हमें बेगाने लगने लगते हैं, तो कई बारी बेगाने हमें अपने लगने लगते हैं। सभी का जीवन ऐसी समस्याओं से घिरा हुआ है, जिसका कोई समाधान नहीं है।

अगर किसी के जीवन से एक समस्या जाती है, तो दूसरी समस्या आ जाती है। ऐसे में तुम एक समस्या का आज समाधान कर लोगे, तो तुम्हें कल दूसरी समस्या का सामना करना पड़ेगा। यही जीवन का एक अटल सत्य है। बुद्ध की बातें सुनकर किसान को गुस्सा आ जाता है और वो उन्हें बोलता है कि लोग आपको महात्मा कहते हैं। मैंने लोगों से ये भी सुना है कि आप सबकी परेशानी दूर करते हैं, पर मेरी समस्या का निवारण करने के बजाय आप मुझे फिजूल की बातें बता रहे हैं। मैं आपके पास बहुत उम्मीद लेकर आया था, पर अब मुझे लग रहा है कि आपके पास मेरा आना व्यर्थ हुआ।

मैंने जो भी आपके बारे में सुना था, वो सब झूठ है।

महात्मा बुद्ध को इतना कहकर किसान वहां से जाने लगता है। तभी उससे भगवान बुद्ध कहते हैं कि तुमने जो समस्याएं बताई हैं, उनका मैं समाधान नहीं कर सकता पर मैं तुम्हारी दूसरी परेशानी का निवारण कर सकता हूँ। बुद्ध की बातें सुनकर किसान हैरान हो गया और बुद्ध से कहता है कि मैंने जो समस्या बताई उसके अलावा मुझे कोई और समस्या नहीं है और है भी तो मुझे उसका ज्ञान क्यों नहीं है। बुद्ध उनसे कहते हैं कि आपकी समस्या यह है कि आप नहीं चाहते हैं कि आपके जीवन में किसी तरह की समस्या हो। खुद को किसी तरह की समस्या न हो, ये सोच रखना ही दूसरी समस्याओं का कारण बनता है। आपको यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि हर व्यक्ति के जीवन में किसी-न-किसी तरह की समस्या होती है। ये सोचना छोड़ दो कि आप इस दुनिया के सबसे दुखी इंसान हो। आपको अपने आसपास के लोगों को देखना चाहिए, क्योंकि बाकी लोग भी किसी-न-किसी चीज से परेशान और दुखी हैं। जीवन में सुख और दुख आकर ही रहेंगे, उसे कोई नहीं बदल सकता। बस तुम्हें दोनों ही स्थिति में खुद को काबू में रखना होगा। इससे दुख का असर तुम पर ज्यादा नहीं होगा।

ऐसे में तुम्हें यह सोचना छोड़ना होगा कि तुम्हारे जीवन में समस्या न हो। तभी तुम हर समस्या का आसानी से सामना कर पाओगे। बुद्ध की बातें सुनकर किसान उनके पैरों पर गिर गया और उनसे माफी मांगने लगा। वो समझ चुका था कि महात्मा बुद्ध उससे क्या कहना चाह रहे हैं।



तोता और राजा

मोतसिन खान, वेबसाइट एसोसिएट



तोता और राजा एक राजा था। उसके महल के उपवन में एक आम का पेड़ था। उस आम के पेड़ पर एक तोता रहता था। एक बार तोते को कहीं से सोने की एक अशफ़ी मिल गई। तोता अशफ़ी का भला क्या करता? इसलिए तोते ने वह अशफ़ी लाकर राजा को दे दी। तोते को लगा कि राजा उसे धन्यवाद दे गा लेकिन राजा ने उससे कुछ नहीं कहा। इसके बाद राजा जब अपनी राजसभा में पहुँचा तो अपने सभासदों को अशफ़ी दिखा-दिखाकर कहने लगा कि 'ये देखो, मेरे पास कितनी सुंदर और कितनी कीमती अशफ़ी है।' 'यह आपको कहाँ से मिली?' एक सभासद ने पूछा। 'यह मेरे पुरखों के समय से मेरे पास है।' राजा ने झूठ बोलते हुए कहा। जब इस बात का पता तोते को चला तो उसे बहुत क्रोध आया कि राजा ने सभासदों को यह क्यों नहीं बताया कि यह अशफ़ी एक तोते ने दी है। तोते ने राजा के पास जाकर उससे झूठ बोलने का कारण पूछा।

'यदि मैं कहता कि तुमने मुझे यह अशफ़ी दी है तो लोग मुझ पर हँसते कि मैंने एक तोते से अशफ़ी ले ली।' राजा ने कहा। 'लेकिन सच तो यही है।' तोता बोला। 'इससे क्या होता है? जो मैं कहूँगा वही सच माना जाएगा।' राजा इठलाकर बोला। 'लेकिन मैं सब को सच बताकर रहूँगा। क्योंकि जब मैंने आपको यह अशफ़ी दी है तो आपको मझे इसका श्रेय देना ही चाहिए, भले ही मैं तोता हूँ। व्यक्ति अपने कर्म से बड़ा होता है, जाति, धर्म या समुदाय से नहीं। आप राजा हैं, आपको यह बात समझनी चाहिए।' तोते ने राजा से कहा। 'ठीक है, तुमसे जो बने सो कर लो। तुम्हारा कहा कोई नहीं मानेगा।' राजा हँस कर बोला। राजा के व्यवहार से क्षुब्ध होकर तोता अपने घोंसले में लौट आया।

कुछ देर बाद तोता पेड़ की सबसे ऊँची फुनगी पर बैठ गया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला- चिल्लाकर कहने लगा— 'बात सुनो सब करके गौर, राजा ठहरा पक्का चोर! उसने एक अशफ़ी पाई जो तोते ने उसे दिलाई राजा अब कहता है 'अपनी' जो है एकदम चीज़ पराई!' राजा के नौकरों ने तोते का गाना सुना तो भाग कर राजा के पास पहुँचे और तोते के गाने के बारे में उसे बताया। राजा समझ गया कि तोता सबको असली बात बताए बिना नहीं मानेगा। उसने नौकरों को आदेश दिया कि जाकर उस तोते को मार डालें।

नौकर राजा का आदेश पाकर तोते को मारने जा पहुँचे। मगर तोते को मारना आसान नहीं था।

एक तो वह सबसे ऊँची डाल की फुनगी पर बैठा था और उस पर यहाँ-वहाँ फुदक जाता था। तोते ने देखा कि राजा ने उसे मारने के लिए अपने नौकर भेजे हैं तो वह और ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा—बात सुनो सब करके गौर, राजा ठहरा पक्का चोर! उसने एक अशफ़ी पाई जो तोते ने उसे दिलाई राजा अब कहता है 'अपनी' जो है एकदम चीज़ पराई मैंने जो ये, बात बताई राजा ने डर, फौज बुलाई इक छोटे से तोते को भी खुद न मार सका यह भाई राजा के नौकरों ने तोते का गाना सुना तो भाग कर राजा के पास पहुँचे और तोते के गाने के बारे में उसे बताया। राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने स्वयं जाकर तोते को मारने का निश्चय किया।

वह डाल - तलवार लेकर निकला। तोते ने देखा कि राजा उसे मारने के लिए तलवार और डाल लेकर आया है तो वह और ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा—बात सुनो सब करके गौर, राजा ठहरा पक्का चोर! उसने एक अशफ़ी पाई जो तोते ने उसे दिलाई राजा अब कहता है 'अपनी' जो है एकदम चीज़ पराई मैंने जो ये बात बताई राजा ने डर फौज बुलाई इक छोटे से तोते को भी खुद न मार सका यह भाई अब होगी उसकी जग हँसाई! इस पर नौकरों ने राजा को समझाया, 'महाराज, एक छोटे से तोते को मारने के लिए डाल-तलवार की क्या आवश्यकता? उसे तो गुलेल से मार गिराया जा सकता है।' राजा को नौकरों की बात पसंद आई। उसने गुलेल उठाई और जा पहुँचा पेड़ के नीचे। तोता दिखते ही राजा ने गुलेल से निशाना साधा और गुलेल चला दी। तोता तो फुदक कर दूसरी डाल पर जा बैठा, लेकिन गुलेल का ककड़ डाल से टकराकर पलट कर राजा को आ लगा। इस प्रकार नन्हें से तोते ने राजा को उसके झूठ का दण्ड दे दिया।



नदी का घमंड



अभिषेक शुक्ला, प्रशासनिक सहायक

एक बार नदी ने समुद्र से बड़े ही गर्वीले शब्दों में कहा बताओ पानी के प्रचंड वेग से मैं तुम्हारे लिए क्या बहा कर लाऊं ? तुम चाहो तो मैं पहाड़, मकान, पेड़, पशु, मानव आदि सभी को उखाड़ कर ला सकती हूँ।

समुद्र समझ गया कि नदी को अहंकार आ गया है। उसने कहा, यदि मेरे लिए कुछ लाना ही चाहती हो तो थोड़ी सी घास उखाड़ कर ले आना। समुद्र की बात सुनकर नदी ने कहा, बस, इतनी सी बात ! अभी आपकी सेवा में हाजिर कर देती हूँ। नदी ने अपने पानी का प्रचंड प्रवाह घास उखाड़ने के लिए लगाया परंतु घास नहीं उखड़ी। नदी ने हार नहीं मानी और बार-बार प्रयास किया पर घास बार-बार पानी के वेग के सामने झुक जाती और उखड़ने से बच जाती। नदी को सफलता नहीं मिली।

थकी हारी निराश नदी समुद्र के पास पहुंची और अपना सिर झुका कर कहने लगी, मैं मकान, वृक्ष, पहाड़, पशु, मनुष्य आदि बहाकर ला सकती हूँ परंतु घास उखाड़ कर नहीं ला सकी क्योंकि जब भी मैंने प्रचंड वेग से खास पर प्रहार किया उसने झुककर अपने आप को बचा लिया और मैं ऊपर से खाली हाथ निकल आई।

नदी की बात सुनकर समुद्र ने मुस्कराते हुए कहा, जो कठोर होते हैं वह आसानी से उखड़ जाते हैं लेकिन जिसने घास जैसी विनम्रता सीख ली हो उसे प्रचंड वेग भी नहीं अखाड़ सकता। समुद्र की बात सुनकर नदी का घमंड भी चूर चूर हो गया।

विनम्रता अर्थात् जिसमें लचीलापन है, जो आसानी से मुड़ जाता है, वह टूटता नहीं। नम्रता में जीने की कला है, शौर्य की पराकाष्ठा है। नम्रता में सर्व का सम्मान संचित है। नम्रता हर सफल व्यक्ति का गहना है। नम्रता ही बड़प्पन है। दुनिया में बड़ा होना है तो नम्रता को अपनाना चाहिए। संसार को विनम्रता से जीत सकते हैं। ऊंची से ऊंची मंजिल हासिल कर लेने के बाद भी अहंकार से दूर रहकर विनम्र बने रहना चाहिए।

विनम्रता के अभाव में व्यक्ति पद में बड़ा होने पर भी घमंड का ऐसा पुतला बनकर रह जाता है जो किसी के भी सम्मान का पात्र नहीं बन पाता। स्थान कोई भी हो, विनम्र व्यक्ति हर जगह सम्मान हासिल करता है। जहां विरोध हो जहां प्रतिरोध और बल से काम नहीं चल सकता। विनम्रता से ही समस्याओं का हल संभव है। विनम्रता के बिना सच्चा स्नेह नहीं पाया जा सकता। जो व्यक्ति अहंकार और वाणी की कठोरता से बचकर रहता है वही सर्वप्रिय बन जाता है।



सच्ची तालीम (शिक्षा)



दिनेश कुमार, संदेशवाहक

राजू एक ऐसा शरारती बच्चा है जिसने पूरे मौहल्ले की नाक में दम कर रखा है। उसकी शरारते भी ऐसी होती कि लोगो के आपस में झगड़े ही करवा देती। वो कभी किसी की साइकिल पंचर कर देता, तो कभी किसी के घर की बेल बजाकर भाग जाता। मौहल्ले वाले राजू से बहुत परेशान हो चुके थे। राजू की उम्र इतनी भी कम नहीं थी, कि उसे बच्चा समझकर छोड़ दिया जाये, इसलिये सभी उसको बहुत डांटते और कभी-कभी तो मार भी देते थे।

जब उसके पापा, दफ्तर से घर वापस आते, तो राजू उनसे पड़ोसियों की शिकायत करता। कभी कहता, उसे शर्मा अंकल ने डाटा या कभी गुप्ता आंटी ने झाड़ू से मारा। जब राजू के पापा पड़ोसियों से बात करने जाते, तो पड़ोसी उल्टा उन्हे ही चार बाते सुना जाते। राजू के पापा, उसकी शरारतों से परेशान हो चुके थे। एक दिन, राजू के पापा ने सोचा। आज वो दिन भर राजू के साथ रहेंगे और उसकी सभी शरारतों में उसका साथ देंगे। सुबह से ही राजू की शरारते शुरू हो गईं। उसने पड़ोसी का न्यूज़ पेपर छिपा दिया। जब गुप्से से लाल पड़ोसी

बाहर आया, तो उन्हे देख राजू जोर-जोर से हंसने लगा। इस बार राजू के साथ उसके पापा को देख पड़ोसी के गुप्से का पारा, मई की गर्मी से भी कई गुना ज्यादा हो गया था। गुप्से से लाल पड़ोसी ने दोनों को बहुत सुनाई, पर जब राजू और उसके पापा को कोई फर्क नहीं पड़ा, तो वो भी दरवाजा पटकते हुये घर के अंदर चला गया।

अब मौहल्ले में बाते भी शुरू हो गई थी। लड़का क्या कम था, जो बाप भी ऐसा करने लगा। राजू ने दिनभर बहुत सी शरारते की, उसके पापा ने भी उसका भरपूर साथ दिया। रात को उसके पापा ने राजू से कहा – तुमने आज बहुत सारी शरारते की और तुम्हें मजा भी बहुत आया पर, अब कल मैं शरारते करूंगा। क्या तुम मेरा साथ दोगे। राजू को तो यह सुनकर मजा ही आ गया। अब अगले दिन सुबह, राजू के पापा, उसे सब्जी बेचने वाली बुढ़िया के पास ले गये। राजू अक्सर ही उस बुढ़िया को बहुत परेशान किया करता था। कभी उसकी सब्जियाँ फेंक देता, तो कभी उसकी चप्पल चुरा लेता। फिर वो बुढ़िया डंडा लेकर उसके पीछे भागती। राजू को लगा पापा भी



कुछ ऐसा करेंगे। लेकिन उसके पापा ने कुछ अलग किया। बुढ़िया जैसे ही अपनी सब्जियों से दूर गई। राजू के पापा ने, राजू के साथ मिलकर सब्जियाँ साफ करके जमा दी। बुढ़िया वापस आई तो, जमी हुई सब्जियाँ देख कर बहुत खुश हुई। थोड़ी देर बाद, जब बुढ़िया की आँख लग गई, तो राजू के पापा ने बुढ़िया की टूटी चप्पल ठीक करवाकर रख दी। जैसे ही बुढ़िया उठी, चप्पलों को देख उसकी आँखे भर आई और वो कहने लगी – भगवान उस फरिश्ते को खुश रखना, जिसने मेरे लिए इतना किया।

शाम होते-होते तक राजू के पापा ने छिपकर बुढ़िया की बहुत मदद की। राजू को भी छिप- छिपकर ये सब करने में बहुत मजा आ रहा था। पर वो यह नहीं जानता था, कि इस बार वो शरारत नहीं, बल्कि लोगो की मदद कर रहा है। थोड़ी देर बाद, राजू के पिता ने बुढ़िया से जाकर कहा, माता जी, आप जानना नहीं चाहती, कि आज आपकी मदद कौन कर रहा है ? बुढ़िया ने कहा – हाँ, बिलकुल जानना चाहती हूँ। तब राजू के पिता ने राजू को आगे बुलाया और कहा – माता जी, ये सब राजू ने किया है। राजू को लगा, आज फिर बुढ़िया उसे झाड़ू से मारेगी और वो भागने लगा। तब बुढ़िया ने उसे पकड़ा और गले लगा लिया। साथ ही, राजू को एक चॉकलेट भी दी।

राजू को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वो अपने पापा के साथ वापस

घर आ गया। पूरे टाइम बोलते रहने वाला राजू आज चुप था। राजू के पापा ने उससे कहा – राजू बेटा, आज जो तुमने किया, क्या तुमको उससे खुशी मिली ? राजू ने कहा – हाँ पापा, और एक चॉकलेट भी मिली। राजू के पापा जोर- जोर से हंसने लगे। राजू के पापा ने उसे समझाते हुये कहा – बेटा, तुम रोज – रोज सबको परेशान करते हो, फिर सब तुम्हें डांटते हैं। और फिर तुम मुझसे आकर, उनकी शिकायत करते हो। लेकिन आज तुमने सबकी मदद की, तो उन्होने तुम्हें बहुत प्यार किया...। राजू को सारी बातें समझ आ जाती हैं और वो शरारते करना बंद कर देता है...

सीख

आजकल के बच्चे इंटेलिजेंट तो होते हैं, पर संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। क्या आपने कभी सोचा है ऐसा क्यों हो रहा है ? ऐसा इसलिये हो रहा है, क्योंकि आजकल के माता – पिता, अपने बच्चों के खिलाफ एक शब्द भी सुनना पसंद नहीं करते, ऐसे मैं वो अपने बच्चों को सही – गलत सीखा ही नहीं पाते। बच्चों को सच्ची तालिम उनके माता – पिता ही दे सकते हैं। अगर राजू के पापा केवल उसी ही की बात सुनते और पड़ोसियों से लड़ते, तो वो राजू को कभी सही-गलत का अहसास नहीं करवा पाते। अगर हर माँ बाप अपने बच्चे को बचपन से ही एक अच्छी तालिम दे, तो एक अच्छे समाज का निर्माण होगा।



बेटा बेटी दोनो प्यारे



पूनम मलहोत्रा, हिंदी अनुवादक

बेटी घर की लक्ष्मी होती,
समझो सबको समझाओ।
देकर मान प्रतिष्ठा रक्षा,
साहस से हृदय सजाओ॥
बेटा-बेटी दोनों प्यारे,
अंतर क्यों तुम करते हो?
दोनों पूरक होते जानो,
तुम हँसके स्नेह लुटाओ॥

सुख-दुख साझा करती माँ से,
जैसे हो एक सहेली।
हाथ बढ़ाए साथ निभाए,
माँ से कब दूर अकेली॥
फिर भी दुत्कारी जाती है,
क्यों वो मारी जाती है?
प्रश्न किया है सबसे मैंने,
पूछी है एक पहेली॥

नारी-नारी की शत्रु बनी,
देख अनोखी ये माया।
काया से काया जो जन्मी,
उसपे ही ज़ुल्म ढहाया॥
हृदय नहीं क्यों देख पसीजा,
आत्मा भी ना रोई रे!
बेटे की चाहत में खोकर,
जब बेटा-भ्रूण मिटाया ॥

हर क्षेत्र किया अब तो अपना,
अंतरिक्ष तक हो आई।
बेटी बेटे से कम कब हैं,
आँखें खोलो तो भाई॥
संस्कारों से पोषित करना,
अनुशासित शिक्षा से भी,
इन पंखों से छू जाए,
बेटी भी नभ ऊँचाई ॥

किस्तों में मत जिया करो



मौ. शाकिब, हिंदी टंकक

हर पल है जिंदगी का उम्मीदों से भरा,
हर पल को बाहों में अपनी भरा करो,
किस्तों में मत जिया करो॥

सपनों का है ऊंचा आसमान,
उड़ान लंबी भरा करो,
गिर जाओ तुम कभी,
फिर से खुद उठा करो॥

हर दिन में एक पूरी उम्र,
जी भर के तुम जिया करो,
किस्तों में मत जिया करो॥

आए जो गम के बादल कभी,
हौसला तुम रखा करो,
हो चाहे मुश्किल कई,
मुस्कान तुम बिखेरा करो॥

हिम्मत से अपनी तुम,
वक्त की करवट बदला करो,
जिंदा हो जब तक तुम,
जिंदगी का साथ ना छोड़ा करो,
किस्तों में मत जिया करो॥

थोड़ा पाने की चाह में,
सब कुछ अपना ना खोया करो,
औरों की सुनते हो
कुछ अपने मन की भी किया करो,
लगा के अपनों को गले गैरों के संग भी हंसा करो,
किस्तों में मत जिया करो॥

मिले जहां जब भी जो खुशी,
फैला के दामन बटोरा करो,
जीने का हो अगर नशा,
हर घूंट में जिंदगी को पिया करो,
किस्तों में मत जिया करो॥

बहुत पहले से

योगेश भट्ट, लेखाकार

प्रगति की लीला न्यारी,
कहीं बरसता पानी, बहती नदिया,
कहीं ऊफनता समंदर है,
तो कहीं शांत सरोवर है!

प्रकृति का रूप अनोखा कभी,
कभी चलती सांय-सांय सी हवा,
तो कभी मौन हो जाती,
प्रगति की लीला न्यारी है।

कभी गगन नीला, लाल, पीला हो जाता है,
तो कभी काले सफेद बादलों से घिर जाता है,
प्रगति की लीला न्यारी है।

कभी सूरज रोशनी से जग रोशन करता है,
तो कभी अंधियारी रात में चांद तारे टिमटिमाते हैं,
प्रगति की लीला न्यारी है।

कभी सुखी धारा धूल उड़ती है,
तो कभी हरियाली की चादर ओड़ लेती है,
प्रगति की लीला न्यारी है।

कभी सूरज एक कोने में छुपता है,
तो दूसरे कोने से निकल चुका होता है,
प्रगति की लीला न्यारी है।



स्मार्ट सिटी

भवनेश भनोट, वरिष्ठ डिज़ाइन एक्सपर्ट



मेरा बर्थडेय हिंदी में होता तो जन्मदिन कहते
परन्तु उस दिन अंग्रेजी में था।
क्योंकि जो लोग वहां आए थे, वे सब बड़े थे
और बस अंग्रेजी ही पढ़े थे।

हिंदी में अनपढ़ थे, पर गंवार नहीं थे
बात तो थी उनके पास पर विचार नहीं थे
मैं केक काटने ही लगा तो पिताजी बोले
बेटा जरा ठहरों, थोड़ा अंग्रेजी तरीके से बर्थडेय गीत तो बोल लो।

इतने में मेरे पिताजी के साहब भी आ गये
मंहगे तोहफे दे कर मेरे मन को खुशी से भर गये
फिर हैप्पी बर्थडेय टू यू की आवाज गूँजने लगी
और मेरे केक काटने की उत्सुकता और जोर मारने लगी।

मैंने पिताजी से पूछा अब केक काट लूँ
पिताजी बोले हाँ बेटा पहले उसपे मैं कैन्डल जला लूँ
कैन्डल जलाने के लिए पिताजी जैसे ही डब्बा खोला
मालूम चला उसमें केक नहीं पर ऊन का था एक गोला

केक डिलीवरी वाला गलत डब्बा दे गया
मानो मेरे बर्थडेय की सारी खुशियाँ ले गया
मेरा और मेहमानों का चेहरा यूँ उतर गया
मानों उनका सपना एक पल में टूट गया।

सभी मेहमान केक कटने का कर रहे थे इंतजार
क्योंकि डिनर के लिए सब थे भूख से बेकरार
तभी पिताजी ने मेहमानों को खुशखबरी सुनाई
और डिनर टेबल बिना केक कटे ही सजाई

खाना खाके सभी बहुत खुश हो गये
पर केक काटने के अरमान मेरे दिल में ही रह गये।

सर्दियों का मौसम



दिनेश कुमार, संदेशवाहक

जैसे खिड़की पर एक दिन
लौट आती है चिड़िया
जैसे बीज में लौटता है एक दिन बीज—
फूलों को याद करते हुए
वैसे ही लौट रहा है सर्दियों का मौसम
कुहरे के कंबल में ठिठुरता
स्मृतियों से लिपटा और उन्हीं की तरह धुँधला
लौट रहा है सर्दियों का मौसम।

कब तक रहा जा सकता है
ऊब और बेचैनी से लिपटकर
हवा में धूप की तरह घुलकर
घूमा जा सकता है शहर
हाथों में बीज लिए फैला जा सकता है
धरती पर हरियाली की तरह
जमा जा सकता है काइयों की तरह—
किसी कूप के इर्द-गिर्द?

जैसे लौट रहा है सर्दियों का मौसम
वैसे ही लौटा जा सकता है
जैसे खिड़की पर लौट रही है चिड़िया
जैसे स्मृतियों में उतर रही है धूप
जैसे रक्त में घुल रही है आग
जैसे मनुष्य के भीतर लौट रहा है मनुष्य!

पानी है कितना अनमोल



अभिषेक शुक्ला, प्रशासनिक सहायक

पानी है कितना अनमोल,
जान लो तुम इसका मोल,
पानी बिना धरती है सूनी,
बिन पानी जीवन का नहीं है मोल।

पानी से ये धरती बनी,
पानी से बने हम और तुम,
पानी से हरियाली यहां,
बिना पानी यहां सब गुमा।

पानी नहीं रहे धरती पर,
सुखा पड़ जाए इस धरती पर,
ना रहें कोई जीवित यहां,
शमशान बन जाएगा इस धरती पर।

नदिया समंदर सब पानी तो है,
तभी खेतों में हरियाली तो है,
अन्न तभी तो मिलता है हमें,
बिन पानी के सब वीरानासा है।

पानी से जीवन है प्यारे,
पानी से जीवित है सारे,
पानी है कितना अनमोल,
जान लो तुम इसका मोल।



माँ



केदार सिंह, केयरटेकर

माँ तुम नहीं रही हो

अब मैं इस स्वीकार कर चुका हूँ

और अगले जन्म वगैरह में

मुझे विश्वास नहीं है

पर मैं तुम्हे ढूँढ़गा जरूर

चित्रकूट की उन बूढ़ी असहाय माताओं में

जिन तक तुम जाना चाहती थी

पर जा न सकी

गढ़वाल, छोटा नागपुर के उन सुनसान घरों में

जहां केवल वृद्ध बच्चे हैं

मनीआईडर और

कमाने गये पूतों के इंतजार में

या उन उदास घरों में

जिन्हें पुलिस नक्सलवादी का पता बताती है

और जहां रहने वाली माँ

बेहद अकेली पड़ चुकी है।

‘मुझे ऐसे ही स्वाद लगता है’

माँ ने मेरे सवाल यों ही टाल दिये

और इस झूठ को पकड़ने में

मूर्ख बेटे ने इतने साल लगा दिये

पहाड़ी झाड़ियों से खट्टे बेर तोड़ने के बाद

तपती लू में गुल्ली डंडा खेलने के पश्चात

सर्द हवा में नंगे पांव घूमकर, ठिठुरकर

बरसात में बिन वजह भीगकर, निघुड़कर

जब-जब अपराध भाव से ग्रस्त लौटता था

और घर के आंगन में या दरवाजे के पास

या ऐसी ही किसी सुरक्षित सी जगह खड़े हो

अंदर वालों के मिजाज को परखता था

तो देखता था जूठे बर्तनों से घिरी माँ

अंगीठी में अपना स्वास्थ्य झोंक रही माँ

गंदे कपड़ों को हंगाल रही

माँ झाड़ू से निपट पोचा लगा रही माँ

जो मुझे देख चिल्लाती थी

इस बार जो बीमार पड़ा तू

तो बाहर कर देना है बिस्तर तेरा

कुछ ख्याल नहीं करना है मैने तेरा

बहुत कड़वे लगते थे तब ये बोल

पर जब सच में बदन तपने लगता था

तब माँ के आंचल तले आराम की नींद आ जाती थी

सो जाता था मैं, माँ रात भर जग जाती थी

जब कालेज की पढ़ाई छोड़कर

आई.ए.एस. प्रोफेसरी का सपना तोड़

कर घर वालों को को घोर निराश कर

मैने लेखन शुरू किया

तो बड़ी हैरानी हुई थी कि

माँ ने यह इतनी आसानी से कैसे मान लिया

यह तो बहुत बाद में पता चला

कि उन दिनों एक थकी परेशान महिला

दरवाजे पर दस्तक देती थी

उन्हे हाथ जोड़कर कहती थी

मेरी तो सुनता नहीं, तुम्हें बहुत मानता है

तुम्हीं उसे समझाओ जरा

और एक ही कमरे के घर में

रहने के बावजूद

मुझे पता नहीं चल सका कि

इस गुप्त कार्यवाही की विफलता पर माँ कब रोई थी

इंतजार नहीं इंतजाम करो



प्रवीन कुमार ग्रोवर, कनिष्ठ लेखाकार

जब बादल गम के छंट जाएंगे,
उजला चेहरा मुस्काएगा ।
हर इंसान जंजीरे तोड़ कर के,
आजादी का हक पा जाएगा ॥

जब फुटपाथ पे कोई न सोएगा,
बच्चा न कोई बेघर होगा ।
किसी घर को अपना कह सके,
हर इंसान का बुनियादी हक होगा ॥

वो दिन कभी तो आएगा,
जब जुल्म मिटाया जाएगा ।
उस दिन का मत इंतजार करो,
उसे लाने का इंतजाम करो ॥

जब खेतों में गेंहू लहलहाएगी,
और उस पे उसी का हक होगा ।
जो अपनी मेहनत व पसीने से,
धरती से अन्न उपजाएगा ॥

हर थाली में अन्न पहुंचेगा,
मेहनत की रोटी खाएंगे ।
ब्रज से ग्वाले दौड़े आएंगे,
बच्चों को दूध पिलाएंगे ॥

वो दिन कभी तो आएगा,
जब जुल्म मिटाया जाएगा ।
उस दिन का मत इंतजार करो,
उसे लाने का इंतजाम करो ॥

जब इज्जत से जीवन जीने का,
हर औरत का पहला हक होगा ।
जब औरत के आगे आने में,
न डर होगा न शक होगा ॥

जब शराब विरोधी बहनों की,
आवाज न दबायी जाएंगी ।
जब दहेज की खातिर इस देश में,
कोई चिता न जलाई जाएगी ॥

वो दिन कभी तो आएगा,
जब जुल्म मिटाया जाएगा ।
उस दिन का मत इंतजार करो,
उसे लाने का इंतजाम करो ॥

जब अमन चैन की दुनिया में,
हम गीत मिलन के गाएंगे ।
मजहब की तंग दीवारों से,
दिल कभी न बांटे जाएंगे ॥

जब रंग बिरंगी बगिया में,
हर फूल की खुशबू महकेगी ।
जब हाथ मिलाकर हाथों से,
हम नया जमाना लाएंगे ॥

वो दिन कभी तो आएगा,
जब जुल्म मिटाया जाएगा ।
उस दिन का मत इंतजार करो,
उसे लाने का इंतजाम करो ॥

‘यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि
हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है’

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जल है तो कल है



तेहन कटार, डिजाइन एसोसिएट

सदा हमें समझाए नानी,
नहीं व्यर्थ बहाओ पानी ।

हरा-भरा रखो इस जग को,
वृक्ष तुम खूब लगाओ ।

हुआ समाप्त अगर धरा से,
मिट जायेगी ये ज़िंदगानी ॥

पानी है अनमोल रत्न,
तुम एक-एक बूँद बचाओ ॥

नहीं उगेगा दाना-दुनका,
हो जायेंगे खेत वीरान ।

जल है तो कल है
यह समझो और समझाओ ।

उपजाऊ जो लगती धरती,
बन जायेगी रेगिस्तान ॥

आज करोगे बचत तुम इसकी
तभी नया कल पाओगे ॥

हरी-भरी जहाँ होती धरती,
वहीं आते बादल उपकारी ।

एक दिन न मिले जो पानी
प्यासे ही रह जाओगे ।

खूब गरजते, खूब चमकते,
और करते वर्षा भारी ॥

नहाओ तुम भर कर बाल्टी
फव्वारे पर नहीं तुम जाओगे॥

पानी की यही कहानी है
कि सब रूपों में पानी है ।

छोटी छोटी बदल कर आदत
पानी को तुम बचा पाओगे ।

तालों में लहराता पानी
कुओं में आता निर्मल पानी॥

सदा हमें समझाए नानी,
नहीं व्यर्थ बहाओ पानी ॥



पत्रिका में योगदान हेतु

संवाद गृहपत्रिका का लक्ष्य शहरीकरण, नगरीय एवं कार्यालय के अन्य विषयों पर जानकारी और कार्मिकों में विचारों का आदान-प्रदान बढ़ाना है। इस पत्रिका को गौरवपूर्ण बनाने के उद्देश्य से आप सब का सहयोग एवं योगदान अपेक्षित है। प्रकाशित रचना के रचनाकार को प्रति रचना 1000/- रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। सभी कार्मिकों से यह भी अनुरोध है कि पत्रिका के अनुरूप निम्नलिखित विषयों पर अपने लेख एवं विचार इत्यादि निःसंकोच भेजें:

- शहरीकरण, नगर संबंधित विषय
- सरकारी नीतियों, शोध पर जानकारी, संदेश टिप्पणी
- ताजा विषयों समाचार क्लिपिंग आदि
- राष्ट्रवाद, देश के सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एकता
- कोई प्रेरणा वर्धक या जन-सेहत एवं दार्शनिक विषय
- कार्यालय या सरकारी नियमों संबंधी जानकारी
- सेवानिवृत्त/कार्यालय छोड़ने वाले कार्मिकों के लिए संदेश
- नई प्रौद्योगिकी संबंधित कोई जानकारी
- रोजाना जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी
- कोई अन्य कविता, निबंध इत्यादि
- शहरी प्रबंधन में श्रेष्ठ कार्य (केस अध्ययन)
- किसी विशिष्ट व्यक्तित्व का साक्षात्कार

**आगामी अंक हेतु आप अपनी प्रविष्टियाँ [ttiware@niua.org/](mailto:ttiware@niua.org)
mshakib@niua.org पर भेज सकते हैं।**

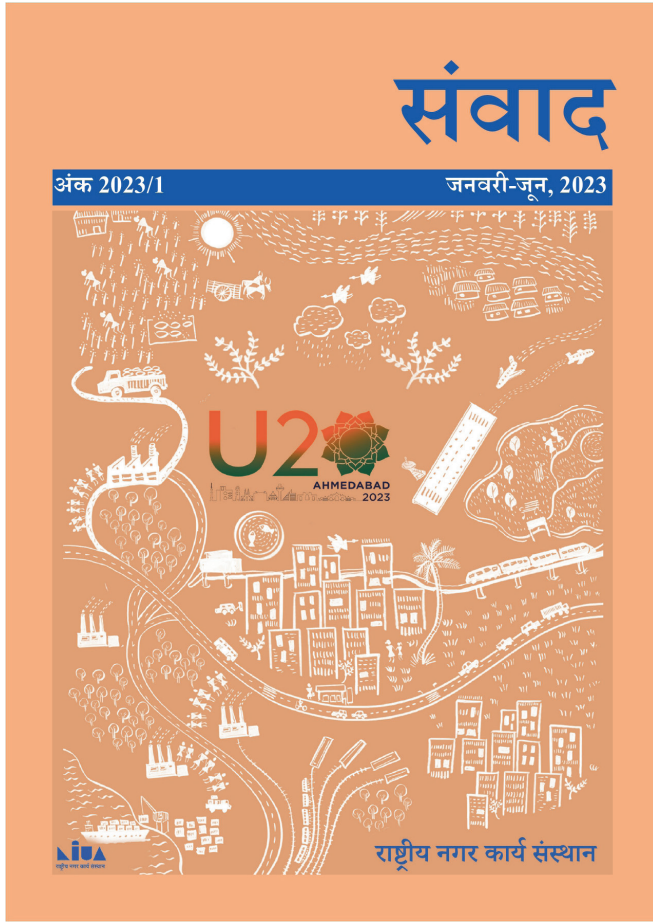
राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के तहत निम्नलिखित दस्तावेजों को हिंदी एवं अंग्रेजी (द्विभाषी रूप) में किया जाना अनिवार्य है:- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ (लाइसेंस), अनुज्ञा पत्र (परमिट), निविदा सूचनाएँ, निविदा फॉर्म।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 6

“अधिनियम की धारा 3 की उप धारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर ले कि ऐसी दस्तावेजें हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।”

संस्थान में जुलाई-दिसंबर, 2023 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाएं



संवाद जुलाई-दिसंबर, 2023



राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

प्रथम एवं द्वितीय तल, कोर 4 बी

भारत पर्यावास केंद्र, लोधी रोड नई दिल्ली - 110003

टेलिफोन 24643284, 24617543, 24643576, 24658639

ई-मेल - niua@niua.org वेबसाइट - www.niua.in